मध्यमा पाठ्य पुस्तक

(प्रश्नोत्तर सहित)

प्रकाशक

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

त्यागरायनगर, चेन्नै - 600 017.

मध्यमा पाठ्य पुस्तक

विषयसूची

पृष्ठ संख्या

पहला पत्र

भाग - 1 -	पद्य	1. संगति का फल	7
		2. एक बूँद	10
		3. अद्भुत माया	13
		4. इंद्रधनुष	15
		5. होनहार	18
		6. दोहावली	21
,भाग - 2 -	गद्य	1. बीरबल की चतुराई	26
		2. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा	31
		3. महाकवि सुब्रह्मण्य भारती	35
		4. डॉ.अब्दुल कलाम	39
		5. सिद्धार्थ का गृह त्याग (एकांकी)	43
		6. हमारा राजचिह्न	48
		7. सरदार वल्लभ भाई पटेल	51
भाग - 3	देवनागरी लिपि का मानक रूप		57

दूसरा पत्र

भाग - 4 - कहानी
1. भगवान सबका एक है!
2. भगीरथ की तपस्या
3. कुत्ते की पूँछ
4. मौन ही मंत्र है!
5. चतुर आदमी
6. सूखे संतरे

भाग - 5 - भरत-मिलाप
1. चार-भाई
2. विश्वामित्र का यज्ञ
3. धनुष यज्ञ
4. राजतिलक की तैयारी
5. मंथरा का षड्यंत्र
6. राम का वनवास
7. भरत का शोक
8. गुह की भक्ति
9. भरत-मिलाप
10. पादुका पट्टाभिषेक

भाग - 6 - रचना 115

भाग - 7 - अनुवाद अभ्यास 170

मध्यमा पाठ्य पुस्तक

पहला पत्र

भाग - 1

पद्य

1. संगति का फल

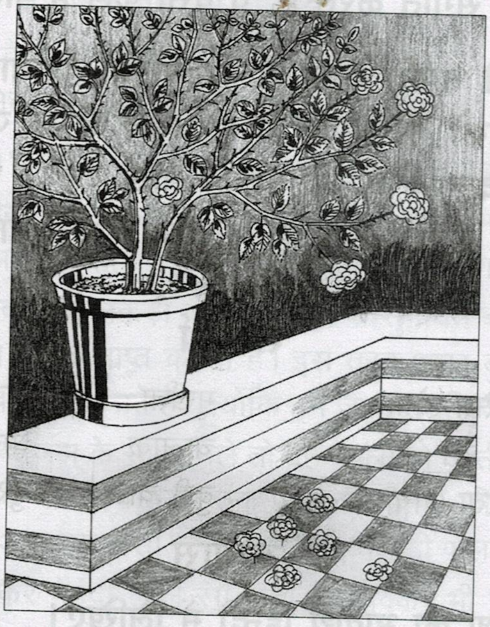

चंदन की संगति करने से लकड़ी में सुवास आती
करने से गुलाब की संगति, मिट्टी खुशबू पा जाती।
बुरे भली संगति करने से भले हमेशा बन जाते
जो जैसी संगति करते हैं, वे वैसा फल हैं पाते।।

काजल की संगति करने से कालिख चीज़ों में आती
संगति से ही बेल, बालको! वृक्ष बराबर बढ़ जाती।
संगति दीपक की करने से कीट पतंगे जल जाते
जो जैसी संगति करते हैं, वे वैसा फल हैं पाते।।

पत्थर की संगति करने से मेहन्दी में लाली आती
पानी की संगति करने से चीनी शरबत हो जाती।
पाले की संगति करने से कमल नष्ट हैं हो जाते
जो जैसी संगति करते हैं, वे वैसा फल हैं पाते।।

साबुन की संगति करने से कपड़ों में शोभा आती
संग आग का करने से लकड़ी कोयला हो जाती।
भले मनुज बुरी संगति से बुरे जगत में कहलाते
जो जैसी संगति करते हैं, वे वैसा फल हैं पाते।

पंडित की संगति करने से दूर मूर्खता हो जाती
पर चालाकों की संगति से बुरी चाल है आ जाती।
सुनो, उदाहरण ये सब हमको सीख यही हैं सिखलाते
जो जैसी संगति करते हैं, वे वैसा हैं फल पाते।।

शब्दार्थ

बढ़ जाना	- विकसित होना	मूर्खता	- अज्ञानता/बेवकूफ़ी
कालिख	- काला रंग	चालाक	- धोखेबाज
शोभा आना	- सुन्दरता आना	बुरी चाल	- बुरा व्यवहार

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ हिन्दी में लिखिए।

"पंडित की संगति करने से दूर मूर्खता हो जाती
पर चालाकों की संगति से बुरी चाल है आ जाती।
सुनो, उदाहरण ये सब हमको सीख यही हैं सिखलाते
जो जैसी संगति करते हैं, वे वैसा हैं फल पाते।।"

संदर्भ : यह पद्यांश **'संगति का फल'** शीर्षक कविता से लिया गया है। कवि इस कविता में अनेक उदाहरणों के सहारे अच्छी संगति के बारे में बताते हैं।

भावार्थ : इन पंक्तियों में कवि कहते हैं, अगर हम अच्छे पंडित या विद्वान और पढे लिखे व्यक्ति के साथ मित्रता करेंगे तो हमारी मूर्खता दूर हो जाती है और हम भी पंडित बनते हैं। लेकिन अगर हम चालाक लोगों से मित्रता करेंगे तो हमें भी अनेक प्रकार की बुरी आदतें आ जाती हैं। इस तरह अनेक उदाहरण के माध्यम से हम सीखते हैं कि हम जिस तरह की संगति करते हैं, उस

तरह का फल पाते हैं। इसलिए सदा हमें अच्छे एवं सुचरित्र वाले व्यक्तियों के साथ ही दोस्ती या मित्रता करनी है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. बुरे कैसे भले बन जाते हैं?
   भले लोगों के साथ संगति करने से बुरे लोग भले हो जाते हैं।
2. किसकी संगति से कीट-पतंगे जल जाते हैं? insect-moths
   दीपक की संगति से कीट-पतंगे जल जाते हैं।
3. कमल क्यों नष्ट हो जाते हैं?
   पाले की संगाति से कमल नष्ट हो जाते हैं।
4. लकड़ी कोयला कैसे हो जाती है?
   आग के साथ मिलने से लकड़ी कोयला हो जाती है।

III. "संगति का फल" कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

संगति का फल कविता हमें, अच्छे एवं आदर्श लोगों के साथ मित्रता करने की सलाह देती है। कवि इस कविता में अनेक उदाहरण देकर कहते हैं कि अच्छे लोगों की संगति अच्छी रहती हैं।

साधारण लकड़ी चन्दन की लकड़ी के साथ रहने से सुगंधित बन जाती है। सामान्य मिट्टी भी गुलाब की संगति से खुशबू प्राप्त करती है। इस तरह अगर बुरे लोग, अच्छे लोगों के साथ मित्रता करेंगे तो वे अच्छे बन जाते हैं। क्योंकि हम जैसी संगति करते हैं, वैसे ही फल पाते हैं।

कोई भी चीज़ अगर काजल के साथ मिले तो वह काली हो जाती है। लताएँ अगर पेड़ के साथ दोस्ती करें तो, पेड़ के सहारे वे ऊपर तक पहुँच जाती हैं। कीट और पतंगे दीपक से दोस्ती करके जल जाते हैं। अतः हम जैसी संगति करते हैं, वैसे ही फल पाते हैं।

पत्थर के साथ मिलकर मेहंदी लाल रंग पाता है। शक्कर भी पानी के साथ मिलकर शरबत बनता है। पाले के साथ संगति करके कमल नष्ट हो जाते हैं। अतः हम जो संगति करते हैं, वैसे ही फल पाते हैं।

कपड़े साबुन के साथ मिलकर साफ़ एवं सुंदर हो जाते हैं। लकड़ी आग के साथ मिलकर कोयला हो जाती है। अच्छे मनुष्य अगर बुरे लोगों के साथ मित्रता करेंगे तो उनको सभी लोग बुरे ही कहेंगे। क्योंकि हम जैसी संगति करते हैं, वैसे ही फल पाते हैं,।

अगर हम अच्छे पंडित या विद्वान और पढे लिखे व्यक्ति के साथ मित्रता करेंगे तो हमारी मूर्खता दूर हो जाती है और हम भी पंडित बन जाते हैं। लेकिन अगर हम चालाक लोगों से मित्रता करेंगे तो हमें भी अनेक प्रकार की बुरी आदतें आ जाती हैं। इस तरह अनेक उदाहरणों के माध्यम से हम सीखते हैं कि हम जिस तरह की संगती करते हैं, उसी तरह का फल पाते हैं। इसलिए सदा हमें अच्छे एवं सुचरित्रवाले व्यक्तियों के साथ ही दोस्ती या मित्रता करनी है।

* * * * *

2. एक बूँद

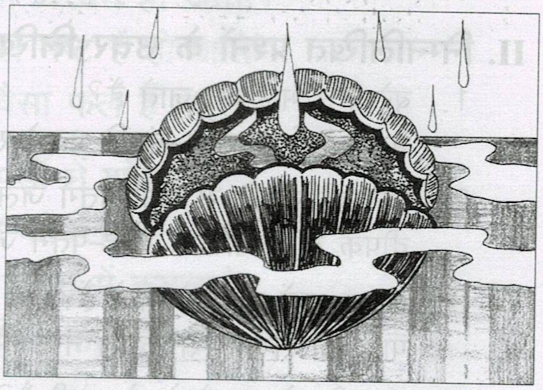

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों बढ़ी?

दैव मेरे भाग्य में क्या है बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में?
या जलूँगी गिर अंगारे पर किसी,
छू पड़ूँगी या कमल के फूल में?

बह गयी उस काल एक ऐसी हवा
वह समुंदर ओर आई अनमनी।
एक सुन्दर सीप का मुँह था खुला
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।

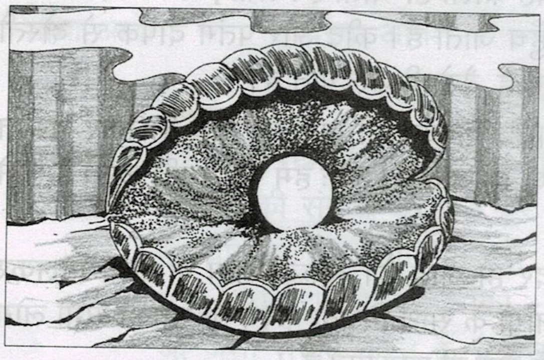

लोग यों ही हैं झिझकते, सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद सा कुछ और ही देता है कर।

- श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

शब्दार्थ

बढ़ी - निकली		बदा - लिखा हुआ (लिखित)	
अंगारा - आग		समुंदर - सागर, समुद्र	
अनमनी - अनिच्छा		झिझकना - संकोच करना	

* * * * *

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ हिन्दी में लिखिए।

a. "देव मेरे भाग्य में क्या है बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
या जलूँगी फिर अंगारे पर किसी,
छू पड़ूँगी या कमल के फूल में"।

संदर्भ:- यह पदयांश **'एक बूँद'** नामक कविता से लिया गया है। इस कविता के कवि हैं **श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।**

भावार्थ:- बादलों की गोदी में से निकलकर एक बूँद बाहर आयी। उसने भगवान से पूछा कि उसके भाग्य में क्या लिखा है; वह बाहर निकलकर बच पायेगी या धूल में मिलकर मिट जायेगी? उसे मालूम नहीं कि वह अंगारे में पड़कर जल जायेगी या कमल के फूल के दलों पर गिर पड़ेगी? उसके नसीब में क्या लिखा है?

b. "लोग यों ही हैं झिझकते सोचते
जब कि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद सा कुछ और ही देता है कर"।

संदर्भ:- यह पद्यांश **'एक बूँद'** नामक कविता से लिया गया है। इस कविता के कवि हैं **श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।**

भावार्थ:- इन पंक्तियों में कवि यह कहना चाहते हैं कि लोग अपना घर छोड़कर बाहर निकलते समय हिचकते हैं, डरते हैं। लेकिन उनको डरने की आवश्यक्ता नहीं है क्योंकि उनको यह विश्वास होना चाहिए कि वे इस बूँद की तरह अच्छी जगह जाकर उत्कृष्ट बन सकते हैं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. बूँद बादलों की गोद से निकलकर क्या सोचती है?
बादलों की गोद में से निकलकर बूँद यह सोचती है कि वह कहाँ जानेवाली है और वह अपने आप को बचा पायेगी या मिट जायेगी।

2. कवि बूँद के भाग्य का वर्णन कैसे करते हैं?

बूँद अपने भाग्य पर बहुत चिंतित है और सोचती है कि उसका भाग्य अच्छा है या बुरा? वह अच्छी जगह पहुँच पायेगी या बुरी जगह जाकर फँस जायेगी।

3. 'बूँद' कैसे मोती बन जाती है?

बूँद अपना रास्ता खोजते-खोजते गयी। अचानक हवा तेज़ बहने लगी और बूँद उस बहाव में समुद्र के एक सीप के खुले मुँह में जाकर गिरी और मोती बन गयी।

4. 'एक बूँद' कविता का उद्देश्य क्या है?

मनुष्य को आशावादी होना चाहिए। यही इस कविता का उद्देश्य है।

III. "एक बूँद" कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

बादलों की गोद में से निकलकर पानी की एक बूँद आगे बढ़ी और बार-बार सोचने लगी कि वह क्यों घर से बाहर निकली।

वह भगवान से पूछती है कि वह बच पाएगी या धूल बनकर मिट्टी में समा जायेगी। वह पूछती है कि वह अंगारे में पड़कर जल जायेगी या कमल के फूल के दलों पर गिर पड़ेगी।

उस समय एक ऐसी हवा बहने लगी जिससे वह बूंद अनायास ही समुद्र में जाकर गिर पड़ी। समुद्र में एक सुन्दर सीप का मुँह खुला था और वह बूँद उसी सीप में जाकर गिर पड़ी और वह मोती बन गयी।

कवि कहते हैं कि बहुत लोग ऐसे हैं जो घर से निकलते समय झिझकते हैं, डरते हैं। लेकिन घर छोड़कर, धीरज होकर बाहर जाने से, वे बूँद की तरह मोती (महान व्यक्ति) भी बन सकते है। courage

* * * * *

अनायास
spontaneously
इत्तफ़ाक
randomly moving

3. अद्‌भुत माया

पत्ती में तेरी हरियाली
मेहन्दी में तेरी लाली।
देखो जहाँ, वहाँ पर तेरी
करामत है, वनमाली।।

बिना डोर के लटक रहे हैं
नभ में नित उज्ज्वल तारे।
बिना प्राण के बजा रहे हैं
वंशी वंश वृक्ष सारे।

कैंची नहीं हाथ में तेरे
कटी पत्तियाँ न्यारी हैं।
रंग नहीं हाथों में तेरे
फूल रंगे बलिहारी हैं।।

जान सका है कौन आज तक
तेरी अद्‌भुत माया है।
कहीं चमकती धूप अंगारे,
कहीं रात-सी छाया है।।

शब्दार्थ

हरियाली - हरा रंग
मेहंदी - हिना
करामत - किया हुआ कार्य
अद्‌भुत - अनोखा
दिवस - दिन
अंगारे – ember / burning charcoal ·

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ हिंदी में लिखिए।

कैंची नहीं हाथ में तेरे
कटी पत्तियाँ न्यारी हैं।
रंग नहीं हाथों में तेरे
फूल रंगे बलिहारी हैं।।

संदर्भ : यह पद्यांश 'अद्भुत माया' नामक कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि भगवान की अद्भुत माया के बारे में बताते हैं;

भावार्थ : इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि, 'हे भगवान, तुम्हारे हाथ में कैंची नहीं है, लेकिन पत्तों को कैसे इतने सुंदर रूप में काटा? तुम्हारे हाथ में कोई रंग नहीं हैं, फिर कैसे इन फूलों को तुमने इतने आकर्षक रंग दिए?'

कवि भगवान की अद्भुत माया देखकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. तारे आकाश में कैसे लटक रहे हैं?
   तारे आकाश में बिना किसी रस्सी के लटक रहे हैं।

2. वंशी वृक्ष कैसे बजा रहे हैं?
   वंशी वृक्ष प्राण के बिना भी बजा रहे हैं।

3. वनमाली की करामत क्या-क्या हैं?
   वनमाली यानि भगवान की करामत अद्भुत है। उनकी अद्भुत माया के कारण कहीं सूरज की किरणें चमकती हैं और कहीं रात की तरह छाया है।

III. "अद्भुत माया" कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

'अद्भुत माया' नामक कविता में कवि भगवान की अद्भुत लीलाओं के बारे में बताते हैं। कवि कहते हैं, भगवान पेड़ के पत्तों में हरा रंग देते हैं; भगवान ही मेहंदी में लाल रंग देते हैं। संसार में जहाँ भी देखिए, वहाँ भगवान की लीला है।

आकाश में अनेक उज्ज्वल नक्षत्र बिना किसी रस्सी के लटक रहे हैं। वन के अनेक वंशी वृक्ष, प्राण के बिना भी संगीत देते हैं।

हे भगवान, तुम्हारे हाथ में कैंची नहीं हैं, लेकिन पत्तों को कैसे इतने सुंदर रूप में काटा? तुम्हारे हाथ में कोई रंग नहीं हैं, फिर कैसे इन फूलों को तुमने इतने आकर्षक रंग दिये?

भगवान की अद्भुत माया को देखकर हमें आश्चर्य होता है। कवि कहते हैं, हे भगवान, आज तक कोई भी तुम्हारी अद्भुत माया के संबंध में नहीं जान सका। अचानक आग की तरह धूप का प्रकाश है और कहीं रात जैसी छाया है।

* * * * *

4. इन्द्रधनुष

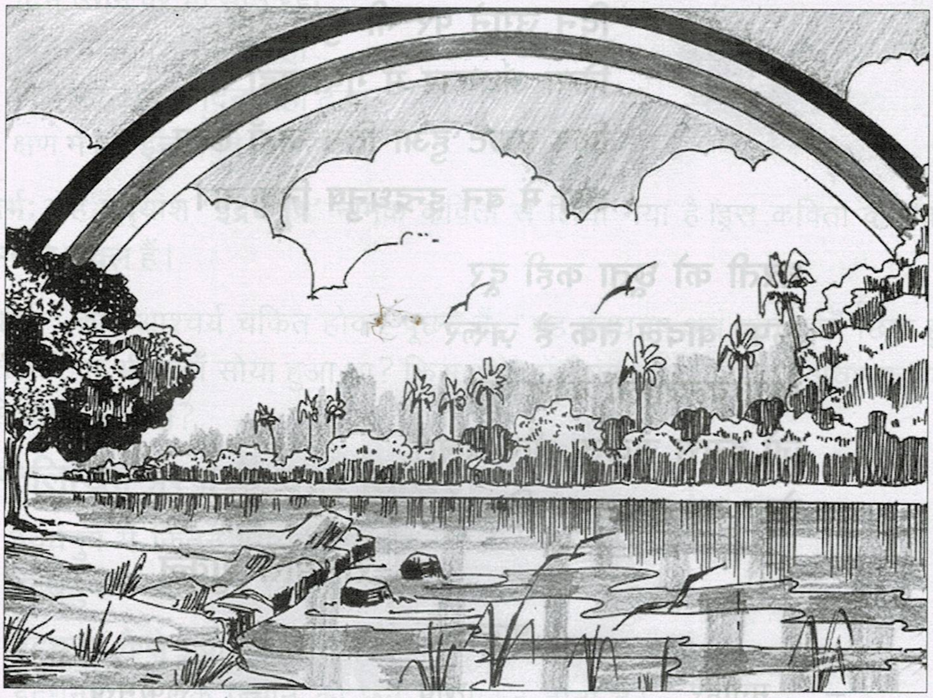

कितना सुन्दर कितना मनहर
देखो यह इन्द्रधनुष निकला!

नारंगी, लाल, हरा, पीला
बैंगनी, आसमानी, नीला
कैसा सुन्दर यह चमकीला
किससे इसको यह रूप मिला?
कैसे यह इन्द्रधनुष निकला?

सातों रंगों का अजब खेल
यह कैसा अद्भुत बना खेल!
तीनों लोकों की छवि उड़ेल,
किस साँचे में यह सुघर ढला,
जो इन्द्रधनुष बनकर निकला।

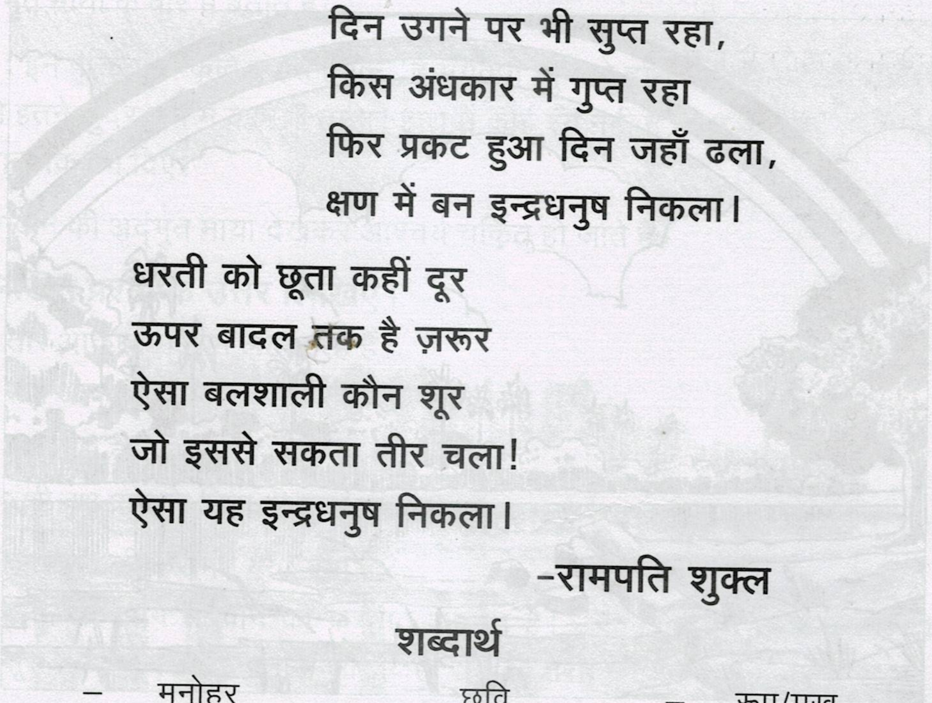

यह कहाँ अभी तक लुप्त रहा,
दिन उगने पर भी सुप्त रहा,
किस अंधकार में गुप्त रहा
फिर प्रकट हुआ दिन जहाँ ढला,
क्षण में बन इन्द्रधनुष निकला।

धरती को छूता कहीं दूर
ऊपर बादल तक है ज़रूर
ऐसा बलशाली कौन शूर
जो इससे सकता तीर चला!
ऐसा यह इन्द्रधनुष निकला।

-रामपति शुक्ल

शब्दार्थ

मनहर	–	मनोहर	छवि	–	रूप/मुख
अजब	–	अनूठा	लुप्त	–	गायब
सुघर	–	कुशल	तीर	–	बाण
अद्भुत	–	अनोखा, आश्चर्यजनक	सुप्त	–	सोया हुआ

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ हिंदी में लिखिए।

1. नारंगी, लाल, हरा, पीला
   बैंगनी, आसमानी, नीला
   कैसा सुन्दर यह चमकीला
   किससे इसको यह रूप मिला?
   कैसे यह इन्द्रधनुष निकला?

संदर्भः यह पद्यांश **'इंद्रधनुष'** नामक कविता से लिया गया है। इस कविता के रचयिता **श्री रामपति शुक्ल** हैं।

भावार्थ : "कवि आश्चर्य चकित होकर पूछते हैं– नारंगी, लाल, हरा, पीला, बैंगनी, आसमानी, नीला– इन सात रंगों का यह सुंदर और चमकीला रूप इंद्रधनुष को किससे मिला? यह इंद्रधनुष कैसे निकला?"

2. यह कहाँ अभी तक लुप्त रहा,
दिन उगने पर भी सुप्त रहा,
किस अंधकार में गुप्त रहा
फिर प्रकट हुआ दिन जहाँ ढला,
क्षण में बन इन्द्रधनुष निकला।

संदर्भः यह पद्यांश **'इंद्रधनुष'** नामक कविता से लिया गया है।इस कविता के रचयिता **श्री रामपति शुक्ल** हैं।

भावार्थ : कवि आश्चर्य चकित होकर पूछते हैं, "यह इंद्रधनुष अब तक कहाँ छिपा हुआ था? दिन होने पर भी कहाँ सोया हुआ था? किस अंधेरे में छिपा हुआ था? फिर अचानक एक क्षण में कैसे बाहर निकला?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. इंद्रधनुष में कितने रंग दिखाई पड़ते हैं?
   इंद्रधनुष में सात रंग दिखाई पड़ते हैं?
2. इंद्रधनुष कैसे प्रकट होता है?
   इंद्रधनुष दूर तक ज़मीन को छूते हुए प्रकट होता है।
3. इंद्रधनुष में कितने लोकों की छवि हैं?
   इंद्रधनुष में तीनों लोकों की छवि हैं।

III. "इंद्रधनुष" कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

इस कविता के रचयिता श्री रामपति शुक्ल हैं। आज इंद्रधनुष निकला है, देखो यह कितना सुंदर है, कितना मनोहर है! इसमें नारंगी, लाल. हरा, पीला, बैंगनी, आसमानी, नीला रंग हैं। इन रंगों का सुंदर चमकीला रूप यह इंद्रधनुष है।

इंद्रधनुष को ये रंग किससे मिले? यह इंद्रधनुष सात रंगों का विचित्र और अद्भुत खेल है। कवि आश्चर्य करते हैं कि तीनों लोकों के सौन्दर्य को मिलाकर, किस तरह के साँचे में ढलकर यह इन्द्रधनुष बना है।

यह अब तक कहाँ छिपा हुआ था? दिन होने पर भी कहाँ सोया हुआ था? अचानक क्षण में यह कहाँ से प्रकट हुआ? यह दूर तक ज़मीन को छूता है। ऐसा धनुष लेकर तीर छोड़नेवाला बलशाली कौन है? यह इंद्रधनुष बहुत सुंदर है।

यह एक वर्णनात्मक कविता है। इंद्रधनुष की सुंदरता से विमुग्ध होकर कवि उसका सुंदर वर्णन करते हैं। வெளிவைப்பது

* * * * *

orange, red, green, yellow, violet, skyblue, darkblue

VIBGYOR

5. होनहार

Promising

होनहार जो होते हैं, वे
अच्छा नाम कमाते हैं।
बड़े सबेरे ही उठ करके
गुण ईश्वर का गाते हैं।।

धो मुँह-हाथ बैठ करके वे
पढ़ने में लग जाते हैं।
खा पीकर वे बड़ी खुशी से
पाठ सीखने जाते हैं।।

बुरे व बदचलनों के संग
बैठ न बात बनाते हैं।
छुट्टी होने पर वे सीधे
घर पर आ ही जाते हैं।।

अदब बड़ों का करते हैं - वे
प्यार सभी को करते हैं।
छोटे बच्चों को खूबी से
अच्छी चाल सिखाते हैं।।

अपना समय कभी न खोते
अपनी बात निभाते हैं।
करते सेवा भलाई सब की
घमण्डी कभी न बनते हैं।

कितना ही वह कठिन काम हो
उसमें झट लग जाते हैं।
मुसीबतों को हँसते सहते
पूरा कर दिखलाते हैं।।

वे ही लड़के आगे चलकर
सबसे इज़्ज़त पाते हैं।
आस-पास की बात नहीं है
जग भर नाम कमाते हैं।।

शब्दार्थ

होनहार	–	चतुर/होशियार	बदचलन	–	दुःचरित्र/ गलत रास्ते पर जाना
अदब	–	सम्मान			
खूबी	–	भलाई/अच्छी तरह	मुसीबत	–	संकट
बात निभाते	–	वचन पूरा करते	झट	–	तुरंत

अभ्यास

I. निम्नलिखित पद्यांश का भावार्थ हिंदी में लिखिए।

वे ही लड़के आगे चलकर
सबसे इज़्ज़त पाते हैं।
आस-पास की बात नहीं है
जग भर नाम कमाते हैं।।

प्रसंग : यह पद्यांश **'होनहार'** नामक कविता से लिया गया है। कवि इसमें होनहार बच्चों के लक्षणों को बताते हैं और कहते हैं कि ऐसे लड़के ही आगे बड़े आदमी बनेंगे।

भावार्थ : जो लड़के होनहार हैं, वे भविष्य में संसार में सबका आदर प्राप्त करेंगे। उनका आदर आस पास के लोग ही नहीं, सारा संसार भी करेगा।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. होनहार बालक क्या कमाते हैं?
   होनहार बालक अच्छा नाम कमाते हैं।
2. होनहार बालक पाठ सीखने कैसे जाते हैं?
   होनहार बालक सबेरे बहुत जल्दी उठकर, अपना मुँह हाथ धोकर पाठ सीखने जाते हैं।
3. स्कूल से छुट्टी होने पर होनहार बालक कहाँ जाते हैं?
   होनहार बालक स्कूल से छुट्टी होने पर सीधे अपने घर आ जाते हैं।
4. होनहार बालक छोटे बच्चों को क्या सिखाते हैं?
   होनहार बालक छोटे बच्चों को अच्छी बातें, अच्छी चाल चलन सिखाते हैं।

5. होनहार लड़कों को आगे जाकर क्या मिलता है?

होनहार बालक को आगे चलकर सबका आदर प्राप्त होता है। आस पास के लोग ही नहीं, सारी दुनिया उनकी इज्ज़त (respect) करती है।

III. "होनहार" कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए:-

'होनहार' नामक कविता में कवि, होनहार बच्चों के बारे में विस्तार से बताते हैं। होनहार बच्चे हमेशा अच्छा नाम प्राप्त करते हैं। वे सुबह जल्दी उठते हैं और भगवान की प्रार्थना करते हैं। होनहार बच्चे सुबह उठते ही, अपना हाथ मुँह साफ करके पढ़ने लगते हैं। इसके बाद नाश्ता आदि करके बहुत खुशी के साथ पाठ सीखने के लिए स्कूल जाते हैं। होनहार बच्चे बुरे तथा गलत काम करनेवाले बच्चों के संग बैठकर अनावश्यक बातें नहीं करते। जब स्कूल से छुट्टी होती है, वे तुरंत अपने घर वापस आ जाते हैं। होनहार बच्चे बड़े लोगों का आदर करते हैं, सभी के साथ प्यार से बोलते हैं। अपने से छोटे बच्चों को अच्छी अच्छी बातें सिखाते हैं। होनहार बच्चे कभी भी अपना समय नष्ट नहीं करते। जो कहते हैं उसे करके दिखाते हैं। सब लोगों की सेवा करते हैं और सबकी भलाई करते हैं। वे कभी गर्व नहीं करते। काम जितना भी कठिन हो, होनहार बच्चे उसे कर देते हैं। कठिनाइयों का हँसते हुए सामना करते हैं और काम को पूरा करते हैं। अंत में कवि कहते हैं,जो लड़के होनहार हैं, वे भविष्य में संसार में सबका आदर प्राप्त करेंगे। उनका आदर आस पास के लोग ही नहीं, सारा संसार भी करेगा।

*****

6. दोहावली (कंठस्थ)

1. कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढे बन माँहिं।
ऐसे घटि-घटि राम है, दुनिया देखै नाहिं।।

2. गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।। कबीरदास

3. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।। रहीम

4. विद्या धन उद्यम बिना, कहो जू पावै कौन।
बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पंखा की पौन।। वृंद

5. हरि-सा हीरा छांड कै, करै आन की आस।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सत भाषै रैदास।। रैदास

6. आवत ही हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेह।। तुलसीदास

शब्दार्थ

कबीरदास

कस्तूरी	- सुगंधित पदार्थ	कुंडल	- नाभि earring
बन	- वन, जंगल	घटि-घटि	- कण-कण
दोऊ	- दोनों	बलिहारी	- निछावर होना To sacrifice oneself

रहीम

धागा	- डोर	तोड़ना	- टूटना	गाँठ	- ग्रंथि
परिजाय	- पड़ जाता है				

वृन्द

उद्यम	- परिश्रम	डुलाये	- हिलाना	पौन	- हवा

रैदास

छांड कै	- छोड़कर	आन	- स्वाभिमान	जमपुर	- यमपुरी
सत	- सत्य				

तुलसीदास

हरषै	- प्रसन्न होना	नैनन	- आँखें	सनेह	- प्रेम
कंचन	- सोना	मेह	- मेघ, बादल		

अभ्यास

I. दोहों का भावपूर्ण वाचन करते हुए कंठस्थ कीजिए।

II. दोहों का भावार्थ हिंदी में लिखिए।

कस्तूरी .... देखे नाहिं

इस दोहे में कबीर कहते हैं, कस्तूरी मृग (हिरण) की नाभि में सुगंधित कस्तूरी उत्पन्न होती है। इसका सुगंध चारों ओर महसूस होती है। लेकिन मृग को यह मालूम नहीं होता कि सुगंध उसकी नाभि में ही है; तो वह सुगंध को ढूँढते हुए फ़िरता है। इसी प्रकार हर एक वस्तु में, हर एक मनुष्य में भगवान वास करते हैं; लेकिन कोई भी इसे नहीं देखते और भगवान की तलाश में घूमते हैं।

गुरु गोविंद ......दियो बताय

इस दोहे में कबीर गुरु की महानता के बारे में बताते हैं। वे कहते हैं कि अगर मेरे सामने गुरु और भगवान दोनों खड़े हैं तो मैं पहले गुरु के चरण में नमस्कार करूँगा; क्योंकि भगवान का परिचय भी मुझे गुरु से ही प्राप्त हुआ। इसलिए गुरु भगवान से ऊँचे हैं।

रहिमन .... परि जाय

इस दोहे में रहीम प्रेम के बंधन के नाज़ुक प्रकृति के बारे में कहते हैं। वे कहते हैं कि प्रेम का धागा (रस्सी) अत्यंत नाज़ुक है; इसे किसी भावावेश में आकर चटपट तोड़ देना नहीं चाहिए; क्योंकि एक बार तोड़ दिया तो फिर से जोड़ना मुश्किल है; अगर जोड़ भी देंगे तो भी उसमें गाँठ रह जाएगी।

विद्या धन .... की पौन

इस दोहे में वृंद कहते हैं कि अगर हमें कुछ सीखना है तो परिश्रम करना चाहिए। क्योंकि किसी प्रयास के बिना विद्या धन हासिल नहीं कर सकते। इसके लिए वृंद एक उदाहरण देते हैं – पंखे को बिना डुलाए, हिलाए हाथ में रखेंगे तो हवा कैसे आएगी? हवा चाहिए तो पंखे को हिलाना है; इसी प्रकार विद्या प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना है।

हरि-सा .... रैदास

इस दोहे में रैदास कहते हैं, भगवान तो हीरा है; लेकिन लोग अपने अहंभाव के कारण भगवान का स्मरण नहीं करते। रैदास का वचन है कि ऐसे लोग यमपुर ही जाएँगे।

आवत .... मेह

इस दोहे में संत तुलसीदास कहते हैं कि जो हमारा स्वागत प्रेम के साथ नहीं करते, उनके यहाँ जाना नहीं चाहिए। कहते हैं, जब हम किसी के घर जाते हैं तो हमारा स्वागत आनंद और हर्ष के साथ होना चाहिए। उनकी आँखों में सच्चे प्रेम दिखना चाहिए। अगर ऐसा नहीं है तो, वहाँ चाहे सोने की वर्षा भी क्यों न हो, हमें जाना नहीं चाहिए।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

1. कबीर ने गुरु और गोविंद में किसे श्रेष्ठ कहा है और क्यों?
   कबीर ने गुरु को श्रेष्ठ कहा है; क्योंकि गोविंद का परिचय हमें गुरु से ही मिलता है।

2. रहीम प्रेम की तुलना किससे करते हैं?

रहीम प्रेम की तुलना धागे से करते हैं।

3. वृंद के अनुसार मेहनत के बिना हम क्या पा नहीं सकते?

वृंद के अनुसार मेहनत के बिना हम विद्या धन पा नहीं सकते।

4. रैदास के दोहे का आशय क्या है?

हमें ईश्वर भक्ति को छोड़कर इधर-उधर भटकना नहीं चाहिए।

5. तुलसीदास के अनुसार किसके घर में नहीं जाना चाहिए?

तुलसीदास के अनुसार जो हमारा स्वागत हँसमुख के साथ नहीं करता, उसके घर में सोने की वर्षा होने पर भी नहीं जाना चाहिए।

* * * * *

मध्यमा पाठ्य पुस्तक

भाग - 2

गद्य

1.	बीरबल की चतुराई	26
2.	दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा	31
3.	महाकवि सुब्रह्मण्य भारती	35
4.	डॉ. अब्दुल कलाम	39
5.	सिद्धार्थ का गृह त्याग *(एकांकी)*	43
6.	"हमारा राजचिह्न"	48
7.	सरदार वल्लभ भाई पटेल	51

1. बीरबल की चतुराई

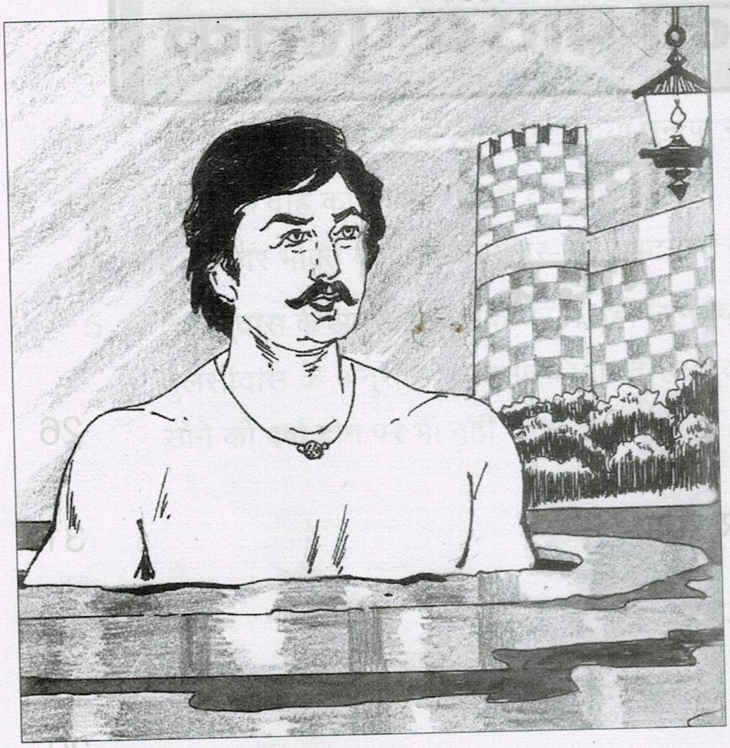

बीरबल अक़बर बादशाह के दरबार में रहता था। वह हाज़िर-जवाब व्यक्ति था। उसकी होशियारी के कारण बादशाह उसे बहुत चाहते थे और उसका आदर भी करते थे।

बादशाह रोज़ शामको राजमहल के बगीचे में टहला करते थे। बीरबल भी उनके साथ जाया करता था। एक दिन दोनों टहलते-टहलते एक छोटे तालाब के पास पहुँचे। बादशाह अपने हाथ-पैर धोने पानी में उतरे। जाड़े के दिन थे। पानी बरफ़ के समान ठंडा था। बादशाह ने झट बाहर आते हुए कहा– "बीरबल! क्या कोई अब इस पानी में नहा सकता है?" बीरबल ने तुरंत उत्तर दिया "नहाने की बात छोड़ दीजिये। पैसा मिलने पर रात-भर इस पानी में खड़ा भी रह सकता है।" बादशाह को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा–"यह असंभव है। अगर कोई इसे कर दिखाये, तो मैं उसे पाँच हज़ार रुपये इनाम में दूँगा।"

दूसरे दिन सबेरे बीरबल ऐसे व्यक्ति की खोज में निकला, जो उसकी बातों को सच्चा साबित कर सकता है। संयोगवश उसने एक देहाती लकड़हारे को देखा, जो अपने सिर पर लकड़ियों का भारी गट्ठा ले जा रहा था। उसका शरीर हट्टा-कट्टा था। वह रात-भर लकड़ी काटकर सबेरे उसे बेचता था। बीरबल ने उससे पूछा–"क्या तुमको सर्दी नहीं लगती?" लकड़हारे ने कहा–"मैं बाल-बच्चोंवाला हूँ। सर्दी-गरमी की परवाह करूँ, तो रोटी कैसे कमाऊँगा?" बीरबल ने उसे सारी बातें समझायीं, तो उसने बादशाह की शर्त सहर्ष स्वीकार कर ली।

शामको छः बजे अक़बर बादशाह सभी दरबारियों के साथ तालाब के पास पहुँचे। वह देहाती भी वहाँ बीरबल के साथ पहुँचा। बादशाह ने कहा–"सुनो, अब से सबेरे छः बजे तक इस तालाब में गरदन तक के पानी में खड़े रहना चाहिए। एक मिनट के लिए भी बाहर नहीं निकलना, समझा? तुमको खाना या पानी भी रात-भर नहीं मिलेगा। बोलो, ये शर्तें मँज़ूर हैं?" देहाती ने कहा "हुज़ूर, सब शर्तें मँज़ूर हैं।" उसी वक्त वह जाकर गरदन तक के पानी में खड़ा हो गया। बादशाह ने दो नौकरों को उस देहाती की रखवाली करने के लिये नियुक्त किया।

दूसरे दिन सबेरे वह देहाती दोनों नौकरों के साथ बादशाह के पास आया। बादशाह को बड़ा ताज्जुब हुआ। उन्होंने पूछा–"तुमको ज़रा भी सर्दी महसूस नहीं हुई?" देहाती ने कहा – "हुज़ूर! तालाब के किनारे पर जो दीप जल रहा था, उसीको देखता हुआ मैं खड़ा रहा। मुझे बिलकुल सर्दी नहीं महसूस हुई।" अक़बर ने कहा–"मालूम होता है, उस दीप की गरमी ने सर्दी को दूर कर दिया। इसलिए तुमको इनाम नहीं मिलेगा।" देहाती मन मसोसकर चुप-चाप बीरबल के पास चला गया और उसने बीरबल से सारी बातें बतायीं। बीरबल ने कहा–"कल शाम तक तुमको इनाम दिलवा दूँगा।"

दूसरे दिन ग्यारह बज गये। बीरबल अब तक दरबार में नहीं आया। उस दिन बादशाह बीरबल को साथ लेकर कहीं जानेवाले थे। इसलिए बादशाह खुद बीरबल के घर गये। बीरबल रसोई घर में खाना पका रहा था। नीचे एक चूल्हा जल रहा था। पाँच फुट ऊँचे सीके पर एक हाँड़ी रखी थी। उसमें पानी और चावल थे। बादशाह को देखते ही

बीरबल बोला–"हुज़ूर! माफ़ कीजिये। देर हो गयी। पर क्या करूँ? यह चावल जल्दी नहीं पकता।" बादशाह ने नज़दीक जाकर देखा, तो उन्हें खूब हँसी आयी। उन्होंने कहा– "बीरबल! तुम कब से इतने बेवकूफ़ बने? चूल्हे का ताप पाँच फुट दूर की हाँडी को कैसे गरम करेगा और चावल कैसे पकेगा?"

बीरबल मुस्कुराते हुए बोला–"जहाँपनाह! आपके बगीचे का दीप दस फुट की दूरी तक अपनी गरमी से सर्दी को दूर कर देता है, पर मेरे घर का चूल्हा पाँच फुट तक अपना ताप बढ़ाकर चावल नहीं पका सकेगा?"

अक़बर को बात समझने में देर नहीं लगी कि बीरबल ने क्यों यह नाटक रचा है। उन्होंने तुरंत देहाती को पाँच हज़ार रुपये इनाम में देने का हुकुम दिया और बीरबल की खूब तारीफ़ की।

अभ्यास

1. हिंदी में अर्थ लिखिए:-

(1) पसंद करना = चाहना (2) इनाम देना=पुरस्कार देना (3) आदर करना=मर्यादा करना

(4) स्वीकार करना = मानना (5) ताज्जुब होना=विचित्र होना/आश्चर्य होना

2. विलोम शब्द लिखिए:-

(1) आदर x अनादर (2) विश्वास x अविश्वास (3) स्वीकार x अस्वीकार

(4) मंजूर x नामंजूर (5) संभव x असंभव

3. जोड़े बनाइए:-

प्रश्न		विकल्प	उत्तर
1. बीरबल बादशाह के साथ	-	देहाती की रखवाली करते थे।	**जाया करता था।**
2. लकड़हारा का शरीर	-	खाना पका रहा था।	**हट्टा-कट्टा था।**
3. दो नौकर	-	बीरबल की खूब तारीफ़ की।	**देहाती की रखवाली करते थे।**
4. बीरबल रसोई घर में	-	हट्टा-कट्टा था।	**खाना पका रहा था।**
5. बादशाह ने	-	जाया करता था।	**बीरबल की खूब तारीफ़ की।**

4. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-**

(1) **होशियारी** - मोहन हर काम **होशियारी** से करता था।

(2) **नियुक्त करना** - बादशाह ने देहाती की रखवाली के लिए दो नौकरों को **नियुक्त किया।**

(3) **हुकम देना** - बादशाह ने बीरबल को **हुकम दिया।**

(4) **संयोगवश** - विमला ने **संयोगवश** कमला को देखा।

5. **निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-**

"बीरबल मुस्कुराते हुए बोला–"जहाँपनाह! आपके बगीचे का दीप दस फुट की दूरी तक अपनी गरमी से सर्दी को दूर कर देता है, पर मेरे घर का चूल्हा पाँच फुट तक अपना ताप बढ़ाकर चावल नहीं पका सकेगा?" अक़बर को बात समझने में देर नहीं लगी कि बीरबल ने क्यों यह नाटक रचा है। उन्होंने तुरंत देहाती को पाँच हज़ार रुपये इनाम में देने का हुकुम दिया और बीरबल की खूब तारीफ़ की।"

1. बगीचे का दीप कितनी दूरी पर जल रहा था।
   बगीचे का दीप दस फुट की दूरी पर जल रहा था।
2. अक़बर के आते समय बीरबल क्या कर रहा था?
   अक़बर के आते समय बीरबल चावल पका रहा था।
3. अक़बर ने क्या हुकम दिया?
   अक़बर ने देहाती को पाँच हज़ार रुपये इनाम में देने का हुकम दिया।
4. क्या, अक़बर ने बीरबल की तारीफ़ की?
   हाँ, अक़बर ने बीरबल की खूब तारीफ की।

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए:-**

(1) बादशाह ने बीरबल से क्या पूछा और बीरबल ने क्या उत्तर दिया?

एक दिन बादशाह और बीरबल टहलते-टहलते एक तालाब के पास पहुँचे, बादशाह अपने हाथ-पैर धोने पानी में उतरे तो पानी बहुत ठंडा था। बादशाह ने बीरबल से पूछा कि क्या कोई इस पानी में नहा सकता है? बीरबल ने तुरंत कहा कि पैसा मिलने पर रात-भर इस पानी में खड़ा भी रह सकता है।

(2) अक़बर ने बीरबल की क्यों तारीफ़ की?

जब अक़बर बीरबल के घर गया तब बीरबल पाँच फुट ऊँचे सीके पर की हाँडी में चावल पका रहा था। अक़बर ने बीरबल से पूछा कि चूल्हे का ताप पाँच फुट दूर की हाँडी को कैसे गरम करेगा और चावल कैसे पकेगा? बीरबल मुस्कुराते हुए बोला कि जब आपके बगीचे के दीप की गर्मी दस फुट तक की सर्दी को दूर कर सकती है तब यह चूल्हा पाँच फुट तक अपने ताप से चावल नहीं पका सकेगा? बादशाह बीरबल की समयोचित बुद्धि से प्रभावित हुए। बादशाह ने देहाती को बुलाकर पुरस्कार दिया और बीरबल की खूब तारीफ़ की।

7. **"बीरबल की चतुराई" पाठ का सारांश लिखिए।**

एक दिन बादशाह और बीरबल टहलते-टहलते एक तालाब के पास पहुँचे, बादशाह अपने हाथ-पैर धोने पानी में उतरे तो पानी बहुत ठंडा था। बादशाह ने बीरबल से पूछा कि क्या कोई इस पानी में नहा सकता है? बीरबल ने तुरंत कहा कि पैसा मिलने पर रात-भर इस पानी में खड़ा भी रह सकता है। बादशाह ने कहा कि "यह असंभव है और अगर कोई इसे कर दिखाये तो मैं उसे पाँच हज़ार रुपये इनाम में दूँगा।" दूसरे ही दिन बीरबल ने एक हट्टा-कट्टा शरीरवाला लकड़हारे को देखा और उससे सारी बातें समझायीं। लकड़हारे ने बादशाह की शर्त स्वीकार कर लीं। शाम को छः बजे लकड़हारा तालाब में गरदन तक के पानी में खड़ा हो गया। अक़बर ने दूसरे दिन सबेरे तक लकड़हारे को पानी में खड़े रहने के लिए कहकर दो नौकरों को रखवाली के लिए नियुक्त किया।

दूसरे दिन सबेरे देहाती बादशाह के पास आया। उसे देखकर बादशाह को ताज्जुब हुआ। देहाती ने कहा कि वह तालाब के किनारे दस फुट की दूरी पर के दीप को देखते हुए पानी में खड़ा रहा। अक़बर ने कहा कि उस दीपक की गर्मी के कारण देहाती को सर्दी महसूस नहीं हुई। इस कारण बादशाह ने इनाम देना इनकार कर दिया। देहाती बीरबल के पास गया। बीरबल ने देहाती से कहा कि कल शाम तक तुमको इनाम दिलवा दूँगा। दूसरे दिन बीरबल दरबार में नहीं आया तो अक़बर बीरबल के घर गये। बीरबल चूल्हे से पाँच फुट ऊँचे सीके पर की हाँडी में चावल पका रहा था। अक़बर ने बीरबल से पूछा कि चूल्हे का ताप पाँच फुट दूर की हाँडी को कैसे गरम करेगा और चावल कैसे पकेगा? बीरबल मुस्कुराते हुए बोला कि "जब आपके बगीचे के दीप की गर्मी दस फुट तक की सर्दी को दूर कर सकती है तब यह चूल्हा पाँच फुट तक अपने ताप से चावल नहीं पका सकेगा?" बादशाह बीरबल की समयोचित बुद्धि से प्रभावित हुए। उन्होंने देहाती को बुलाकर पुरस्कार दिया और बीरबल की खूब तारीफ़ की।

* * * * *

2. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

आपने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का नाम सुना होगा। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा संसदीय अधिनियम 14, 1964 के अंदर एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था (An Institution of National Importance under Parliament Act 14, 1964) है। इस संस्था के द्वारा संचालित विभिन्न परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में छात्र भाग लेते हैं। इसकी शाखाएँ दक्षिण के चारों प्रांतों में - आंध्र व तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में हैं। दिल्ली में भी इसकी शाखा है। इन शाखाओं का प्रधान कार्यालय चेन्नै में स्थित है। यह कार्यालय 'केंद्र सभा' के नाम से जाना जाता है।

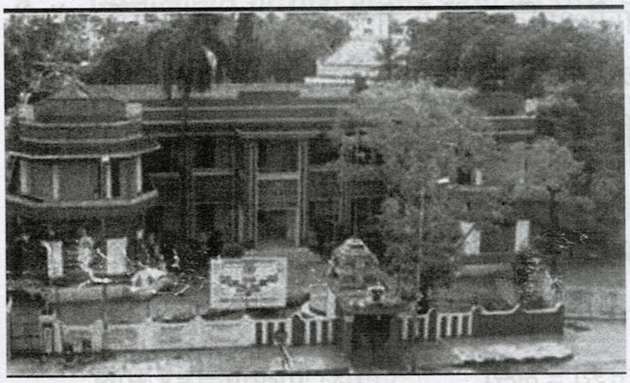

इस महत्वपूर्ण संस्था की स्थापना राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी ने सन् 1918 में मद्रास (चेन्नै) में की। भारत बहुभाषी देश है। भारत के बहुभाषी लोगों को एक सूत्र में बाँधने के विचार से गाँधीजी ने इस संस्था की नींव डाली। वे खुद आजीवन इस संस्था के अध्यक्ष भी रहे। गाँधीजी के उद्देश्यों को पूरा करने के विचार से सभा ने सन् 1918 में हिंदी वर्ग आरंभ किया। गाँधीजी के सुपुत्र देवदास गाँधी प्रथम प्रचारक बनकर मद्रास आये।

भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी सिखाने के लिए सभा ने कई पुस्तकों का प्रकाशन किया। उनमें 'हिंदी स्वबोधिनी' और 'स्वयं शिक्षक पुस्तिका' काफ़ी लोकप्रिय हुईं। सभा दक्षिण के चारों प्रांतों में ऐसी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है, जिससे हज़ारों की संख्या में हिंदी भाषा के कुशल प्रचारक निकल रहे हैं। ये प्रचारक दक्षिणी भाषाओं के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान और हिंदी शिक्षण का महत्वपूर्ण कार्य करते आ रहे हैं।

सभा की चारों प्रांतीय शाखाएँ हिंदी के साथ अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित करती आ रही हैं। आंध्र शाखा से 'स्रवंति', कर्नाटक शाखा से 'भारत वाणी', केरल शाखा से 'केरल भारती' और तमिलनाडु से 'हिंदी पत्रिका' निकल रही हैं। केंद्र

सभा से 'हिंदी प्रचार समाचार' एवं 'दक्षिण भारत' प्रकाशित हो रही हैं। इन पत्रिकाओं से आम जनता और प्रचारक लाभान्वित होते आ रहे हैं।

इस महत्वपूर्ण संस्था के कुछ महापुरुषों के नामों का यहाँ उल्लेख करना उपयुक्त होगा – श्री/सर्वश्री - देवदास गाँधी, लालबहादुर शास्त्री, हरिहर शर्मा, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभ भाई पटेल, मोट्टूरी सत्यनारायण, राजाजी, पंडित अवधनंदन, सिद्धनाथ पंत, श्रीमती इंदिरा गाँधी, राजीव गाँधी, पी.वी.नरसिंह राव, डॉ.बी.डी जत्ती, आर.वेंकटरामन, न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्र, एम.महादेव, एम.वी.राजशेखरन, डॉ.न्यायमूर्ति वी.एस.मल्लिमठ, जस्टिस शिवराज वी.पाटिल, रामस्वामी अय्यंगार, ए.पी.सी.वीरबाहु, प्रो. नागप्पा, झण्डा नारायणन, विद्वान सुंदर कृष्णमाचारी आदि। गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में हिंदी का प्रचार भी एक है। उनके इस रचनात्मक कार्यक्रम को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा सफल बनाती आ रही है। विपरीत परिस्थितियों से गुज़रते हुए यह संस्था गाँधीजी के सपनों को साकार बनाती आ रही है।

अभ्यास

1. हिंदी में अर्थ लिखिए:-

(1) स्थित = बसा हुआ (2) उद्देश्य = लक्ष्य (3) प्रतिवर्ष = हर साल
(4) खुद = स्वयं (5) आजीवन = जीवन भर (6) गुज़रना = बीतना

2. विलोम शब्द लिखिए:-

(1) दक्षिण x उत्तर (2) सुपुत्र x कुपुत्र (3) प्रथम x अंतिम
(4) आरंभ x अंत (5) साकार x निराकार (6) उपयुक्त x अनुपयुक्त

3. जोड़े बनाइए:-

	प्रश्न	विकल्प	उत्तर
1.	दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा	- भारत वाणी।	**राष्ट्रीय महत्व की संस्था है।**
2.	भारत	- स्रवंति।	**बहुभाषी देश है।**
3.	आंध्र शाखा	- हिंदी प्रचार समाचार एवं दक्षिण भारत।	**स्रवंति।**
4.	कर्नाटक शाखा	- राष्ट्रीय महत्व की संस्था है।	**भारत वाणी।**
5.	केंद्र सभा	- बहुभाषी देश है।	**हिंदी प्रचार समाचार एवं दक्षिण भारत।**

4. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-**

(1) **संस्था** - दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा एक राष्ट्रीय महत्व की **संस्था** है।

(2) **नींव डालना** - गाँधीजी ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की **नींव डाली**।

(3) **बहुभाषी** - भारत में कई भाषाएँ बोली जाती हैं, इसलिए यह **बहुभाषी** देश कहलाता है।

(4) **आजीवन** - गाँधीजी **आजीवन** दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अध्यक्ष रहे।

(5) **लाभान्वित होना** - सभा की पत्रिकाओं से आम जनता और प्रचारक **लाभान्वित** होते आ रहे हैं।

5. **निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-**

"आपने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का नाम सुना होगा। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा एक संसदीय अधिनियम 14, 1964 के अंदर राष्ट्रीय महत्व की संस्था (An Institution of National Importance under Parliament Act 14, 1964) है। इस संस्था के द्वारा संचालित विभिन्न परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में छात्र भाग लेते हैं। इसकी शाखाएँ दक्षिण के चारों प्रांतों में - आंध्र व तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में हैं। दिल्ली में भी इसकी शाखा है। इन शाखाओं का प्रधान कार्यालय चेन्नै में स्थित है। यह कार्यालय 'केंद्र सभा' के नाम से भी जाना जाता है।"

(1) सभा की परीक्षाओं में प्रतिवर्ष कितने छात्र भाग लेते हैं?
सभा की परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में छात्र भाग लेते हैं।

(2) सभा की शाखाएँ किन-किन प्रांतों में हैं?
सभा की शाखाएँ दक्षिण के चारों प्रांतों -आंध्र व तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में हैं।

(3) सभा का प्रधान कार्यालय कहाँ स्थित है?
सभा का प्रधान कार्यालय चेन्नई में स्थित है।

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए।**

(1) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था है। इसकी शाखाएँ दक्षिण के चारों प्रांतों में हैं। इन शाखाओं का प्रधान कार्यालय चेन्नई में स्थित है। गाँधीजी ने इस संस्था की स्थापना सन् 1918 में चेन्नई में की। यह संस्था गाँधीजी के सपनों को साकार

बनाती आ रही है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, संसदीय अधिनियम 14, 1964 के अंदर राष्ट्रीय महत्व की संस्था है।

(2) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख कीजिए।

दक्षिण की चारों प्रांतीय शाखाएँ हिंदी के साथ अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित करती आ रही हैं। आँध्र शाखा से 'स्रवंति', कर्नाटक शाखा से 'भारतवाणी' केरल शाखा से "केरल भारती" और तमिलनाडु से "हिंदी पत्रिका" निकल रही हैं। केंद्र सभा से "हिंदी प्रचार समाचार" एवं "दक्षिण भारत" प्रकाशित हो रही हैं। इन पत्रिकाओं से आम जनता और प्रचारक लाभान्वित होते हैं।

7. "दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा" पाठ का सारांश लिखिए।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था है। इसकी शाखाएँ दक्षिण के चारों प्रांतों में - आँध्र व तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में हैं। इन शाखाओं का प्रधान कार्यालय चेन्नई में स्थित है। गाँधीजी ने इस संस्था की स्थापना सन् 1918 में की। वे आजीवन इस संस्था के अध्यक्ष रहे। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, संसदीय अधिनियम 14, 1964 के अंदर राष्ट्रीय महत्व की संस्था है।

भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी सिखाने के लिए सभा ने कई पुस्तकों का प्रकाशन किया। सभा से हर साल हज़ारों की संख्या में हिंदी भाषा के कुशल प्रचारक निकल रहे हैं। दक्षिण की चारों प्रांतीय शाखाएँ हिंदी की पत्रिकाएँ प्रकाशित कर रही हैं। केन्द्र सभा से 'हिंदी प्रचार समाचार' एवं 'दक्षिण भारत' प्रकाशित हो रही हैं। इनके द्वारा आम जनता लाभाविन्त होती है।

गाँधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में हिंदी का प्रचार भी एक है। उनके सपनों को सभा साकार बनाती आ रही है।

केवल पढ़ने के लिए

'सु' - उपसर्ग का प्रयोग

पुत्र	सुपुत्र	नाम	सुनाम
शील	सुशील	मति	सुमति
लेख	सुलेख	पात्र	सुपात्र

* * * *

3. महाकवि सुब्रह्मण्य भारती

तमिलनाडु का कौन ऐसा आदमी होगा, जो महाकवि सुब्रह्मण्य भारती का नाम न जानता हो। बचपन में उनको सुब्बैया कहते थे। जब हमारा देश गुलामी के शिकंजे में पड़ा हुआ था, तब जनता को जगाने के लिए भारती ने कविता का प्रयोग किया। उन्होंने जनता में केवल जागरण ही नहीं, बल्कि बल और उत्साह भी पैदा किए।

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म तमिलनाडु के तूत्तुक्कुडी जिले के एट्टयपुरम नामक गाँव में, सन् 1882, दिसंबर 11 के दिन हुआ। भारती के पिता श्री चिन्नस्वामी अय्यर और माँ श्रीमती लक्ष्मी अम्माल थे। बचपन में ही उनकी माता स्वर्ग सिधारीं, उनकी 25 वर्ष की आयु में उनके पिता का भी निधन हो गया।

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात" इस कथन के अनुसार सुब्रह्मण्य भारती बचपन से ही कविता रचने लगे थे। "एट्टयपुरम के जमींदार के यहाँ कवियों का आदर-सत्कार होता था और कवि-मंडली में बालक सुब्रह्मण्य भारती भी शामिल होते थे। भारती के पिता भी तमिल के अच्छे विद्वान थे। इसलिए भारती छुटपन से ही अपना चमत्कार दिखाने लगे।"

स्कूली पढ़ाई के बाद भारती बनारस में अपनी बुआ के पास दो साल रहे। वहीं रहकर उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रवेशिका परीक्षा पास की और हिन्दी का भी

अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। एट्टयपुरम के ज़मींदार से निमंत्रण मिलने पर वे अपने गाँव चले आये। कुछ समय तक वे उनके यहाँ कवि रहे। इसी समय उनका विवाह हुआ। विवाह के समय वे सोलह-सत्रह वर्ष के थे।

उन्नीस बरस की उम्र में भारती को अपनी जीविका के लिए परिवार के साथ गाँव छोड़ना पड़ा। पहले कुछ दिनों तक मदुरै में वे तमिल भाषा के अध्यापक रहे। फिर "स्वदेशमित्रन" नामक तमिल पत्रिका के सहकारी संपादक बने। अपनी तेज़ वाणी को प्रकट करने के लिए और अपने देशवासियों के विचारों में क्रांति पैदा करने के लिए उन्होंने बाद में एक नई पत्रिका शुरू की।

भारतीय लोगों में देश-भक्ति भावना को जगाने के लिए वे कविताएँ लिखते थे। 'इंडिया', 'ज्ञानभानु', 'विजया', 'कर्मयोगी' आदि तमिल पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन कार्य भी करते रहे। इसी काल-खण्ड में भारती जनता के बीच बहुत प्रसिद्ध हुए। उनकी लेखनी में, मुर्दों में भी जान फूँकने की शक्ति थी। देशभक्ति से भरी उनकी जोशीली कविताएँ घर-घर गायी जाने लगीं। यह देखकर सरकार के कान खड़े हो गये। भयभीत होकर उसने भारती की सारी कविताओं को ज़ब्द कर लिया और उन्हें कैद करने का आदेश दिया।

इस स्थिति से बचकर जनता की सेवा करने के लिए सन् 1908 में भारती पांडिचेरी पहुँचे। पांडिच्चेरी में फ्रेंच लोग शासन कर रहे थे। इसलिए अंग्रेज़ लोगों का कानून वहाँ नहीं चलता था। उन्होंने कई तरह के कष्ट भोगे।

पांडिचेरी के शांत वातावरण में श्री व.वे.सु. अय्यर, श्री अरविन्द आदि के सत्-संगति में उनकी प्रतिभा का पूर्ण विकास हुआ। उनको वहाँ बहुत कष्ट भुगतना पड़ा। इन कारणों से उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया।

आखिर सन् 1918 में भारती फिर मद्रास आये और कुछ समय तक अनेक कठिनाइयों का सामना करते रहे। अनिश्चित रूप से इधर-उधर भटकते रहे। दुबारा वे 'स्वदेशमित्रन' के सहकारी संपादक बने। सन् 1921, सितंबर 11 के दिन आप अपने 38 साल की उम्र में स्वर्ग सिधारे।

अभ्यास

1. हिंदी में अर्थ लिखिए:-

(1) शिकंजा = पंजे में/पकड़ में

(2) स्वर्ग सिधारना = मर जाना

(3) चमत्कार = करामात

(4) जान फूँकना = प्राण देना

(5) अत्याचार = जुल्म

2. विलोम शब्द लिखिए:-

(1) उत्साह X निरुत्साह

(2) बिगड़ना X बनना

(3) मुर्दा X ज़िन्दा

(4) सत्–संगति X कुसंगति

3. जोड़े बनाइए:-

प्रश्न	विकल्प	उत्तर
1. भारती के पिता	- कवियों का आदर करते थे।	**तमिल के अच्छे विद्वान थे।**
2. एट्टयपुरम के जमींदार	- तमिल के अच्छे विद्वान थे।	**कवियों का आदर करते थे।**
3. भारती की कविताएँ	- कई तरह के कष्ट भोगे।	**देश भक्ति से भरी हुई हैं।**
4. पांडिच्चेरी में भारती ने	- सहकारी संपादक बने।	**कई तरह के कष्ट भोगे।**
5. भारती 'स्वदेशमित्रन' के	- देशभक्ति से भरी हुई हैं।	**सहकारी संपादक बने।**

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

(1) **शामिल होना** - आज की सभा में आपको **शामिल होना** चाहिए।

(2) **मशहूर होना** - भारतीय संस्कृति दुनिया भर में **मशहूर है।**

(3) **कर्मचारी** - मेरे पिताजी एक सरकारी **कर्मचारी हैं।**

(4) **संपादक** - भारती 'स्वदेश मित्रन' पत्रिका के सह–**संपादक थे।**

5. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

भारतीय लोगों में देश-भक्ति भावना को जगाने के लिए कविताएँ लिखते थे। 'इंडिया', 'ज्ञानभानु', 'विजया', 'कर्मयोगी' तमिल पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन कार्य भी करते रहे। इसी काल-खण्ड में भारती जनता के बीच बहुत प्रसिद्ध हुए। उनकी लेखनी में, मुर्दों में भी जान फूँकने की शक्ति थी। देशभक्ति से भरी उनकी जोशीली कविताएँ घर-घर गायी जाने लगीं। यह देखकर सरकार के कान खड़े हो गये। भयभीत होकर उसने भारती की सारी कविताओं को ज़ब्द कर लिया और उन्हें कैद करने का आदेश दिया।

(1) भारती क्यों कविताएँ लिखते थे?

कवि भारती भारतीय लोगों में देश–भक्ति भावना को जगाने के लिए कविताएँ लिखते थे।

(2) भारती कौन-सी पत्रिकाएँ चलाते थे?

भारती 'इंडिया', 'ज्ञानभानु', 'विजया', 'कर्मयोगी' आदि तमिल पत्रिकाओं का प्रकाशन और संपादन कार्य भी करते रहे।

(3) कवि भारती पांडिच्चेरी क्यों गये?

अंग्रेज़ी सरकार भारती को कैद करना चाहती थी। कैद से बचने के लिए वे पांडिच्चेरी गये।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में लिखिए:-

(1) भारती के बचपन के बारे में आप क्या जानते हैं?

भारती को बचपन से ही तमिल का अच्छा ज्ञान था। बचपन में उनको सुब्बैया कहते थे। उस समय वे कविता भी लिखते थे। बालकवि भारती, कवि–मंडलियों में भाग लेते थे। एट्टयपुरम के ज़मींदार उनका आदर–सत्कार करते थे। भारती बचपन से ही अपना चमत्कार दिखाते थे।

(2) भारती की कविताएँ जनता को क्यों पसंद आयीं?

भारती की कविताएँ देश–भक्तिपूर्ण थीं। वे कविताएँ जोशीली भी थीं। देश की आज़ादी के लिए जनता को प्रेरित करती थीं। उनकी कविताओं में मुर्दों में भी जान फूँकने की शक्ति थी। इसलिए भारती की कविताएँ जनता को पसंद आयीं।

7. "महाकवि सुब्रह्मण्य भारती" पाठ का सारांश लिखिए।

सुब्रह्मण्य भारती का जन्म सन् 1882, दिसंबर 11 के दिन तूत्तुक्कुड़ी जिले के एट्टयपुरम नामक गाँव में हुआ। बचपन में उनको सुब्बैया कहकर पुकारते थे। उनके पिता का नाम चिन्नस्वामी अय्यर और माता का नाम लक्ष्मी अम्माल था। भारती बचपन में ही कविताएँ रचते थे। ज़मीनदार के यहाँ उनका आदर–सत्कार होता था। कवि मंडली में भी बालक भारती भाग लेते थे।

भारती स्कूली पढ़ाई के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय की प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। उनको हिन्दी का अच्छा ज्ञान था। वे एट्टयपुरम के ज़मींदार के यहाँ कवि थे। उसके बाद वे मदुरै के एक स्कूल में तमिल अध्यापक रहे। फिर 'स्वदेशमित्रन' पत्रिका के सह–संपादक रहे। देशवासियों में क्रांति पैदा करने के लिए उन्होंने एक नयी पत्रिका भी निकाला और उसका संपादन भी किया।

कवि भारती की कविताएँ लोगों में देश–भावना जगाने लगीं। इससे नाराज़ होकर अंग्रेज़ी सरकार ने उनकी कविताओं को ज़ब्त किया। अंग्रेज़ी सरकार की गिरफ़्तारी से बचने के लिए वे पांडिच्चेरी गये। अरविंद और व.वे.सु. अय्यर की संगति में रहने के कारण उनकी प्रतिभा का विकास हुआ।

सन् 1918 में भारती मद्रास आये। वे पुनः 'स्वदेशमित्रन' के सह–संपादक बने। स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण सन् 1921, सितंबर 11 के दिन भारती स्वर्ग सिधारे।

* * * * *

4. डॉ. अब्दुल कलाम

विद्या देती नयी कल्पना, कल्पना लाती नये विचार।
नये विचारों से मिले ज्ञान, ज्ञान बनाए आपको महान।।

- डॉ. अब्दुल कलाम

डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे। उनका जन्म 15 अक्तूबर 1931 को रामेश्वरम में हुआ था। उनका परिवार बहुत साधारण परिवार था।

अब्दुल कलाम का व्यक्तिगत जीवन कठिन परिश्रम करते हुए बीता। वे प्रतिदिन 18 घंटे काम करते थे। एक आदर्श छात्र की तरह वे अपनी सफलता का श्रेय अपने शिक्षकों को देते थे। बचपन की एक घटना सुनाते हुए उन्होंने हमें एक प्रेरक संदेश दिया है। उस घटना का वर्णन उन्हीं के शब्दों में पढ़िए।

"जब मैं दस वर्ष का था, तब पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। मेरे अध्यापक श्री शिवसुब्रमण्यम अय्यर हमें पढ़ा रहे थे।

'पंछी कैसे उड़ते हैं'? यह प्रश्न करते हुए उन्होंने श्याम पट पर एक चिड़िया का चित्र बनाया। उसकी चोंच, पैर-पंख और दुम बनाने के बाद वे हमें बताने लगे कि चिड़िया कैसे उड़ती है। वे करीब 45 मिनट तक यही समझाते रहे। फिर उन्होंने हमसे पूछा, "कितने छात्रों की समझ में यह बात आयी"?

बहुत-से हाथ उठे, किंतु हममें से तीन बच्चे ऐसे थे, जिनके हाथ नहीं उठे। उसी समय घंटी बज गयी। उन्होंने कहा, "जो समझ नहीं पाये, वे छात्र शाम को मेरे घर आएँ।"

शाम को हम सब उनके घर पहुँच गये। वे हमें समुद्रतट ले गये। उन्होंने एक चिड़िया की ओर इशारा करते हुए कहा, "देखो, पंख पर ध्यान दो। पंख फड़फड़ा रहे हैं। अब दुम उठी, पंख हिले और दिशा बदल गयी। अच्छा, यह बताओ चिड़िया कैसे उड़ती है? कार और हवाई जहाज़ में मशीन लगी होती है, चिड़िया में ऐसा क्या होता है?" मैंने कहा - "इसमें जीवन होता है।" उन्होंने कहा "हाँ, शाबाश! यह जीवन ही है, जो हमारे मस्तिष्क को बनाए रखता है।"

उस दिन से मुझे एक धुन लग गयी। मैं दस वर्ष का था, लेकिन मुझे 'चिड़िया का उड़ना' पाठ प्रेरणा देने लगा। मैं कुछ कर गुज़रना चाहता था। नन्हीं चिड़िया इतनी ऊँचाई तक उड़ सकती है तो मनुष्य क्यों नहीं उड़ सकता? मेरे शिक्षक इतने अच्छे थे कि उन्होंने मुझे स्वप्न में उड़ने के भाव को साकार करने का मनोबल दिया।

स्कूली शिक्षा पूर्ण करके मैंने 'मद्रास इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालॅजी' से 'एरोनॉटिकल इंजिनियरिंग' की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद 'इसरो' [ISRO - Indian Space Research Organisation भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन] में राकेट इंजिनियरिंग का कोर्स करके वहीं से अपने कैरियर की शुरूआत की।

मेरे शिक्षकों ने मुझे इतना ऊँचा उठा दिया कि उनके कारण ही मैं आज बुलंदियों को छू रहा हूँ। हमारे जीवन में हमें शिखर पर लानेवाले तीन व्यक्ति ही होते हैं। वे हैं माता, पिता और गुरु। ये तीनों ही हमारे मन में सर्वोत्तम विचार और चरित्र का बीजारोपण कर सकते हैं।"

आज डॉ. अब्दुल कलाम की गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों में की जाती है। भारत के उपग्रह संबंधी कार्यक्रमों में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। भारत सरकार ने इनको पद्मभूषण, पद्मविभूषण और भारत-रत्न जैसे सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया। छात्रो! देखा? एक साधारण-सी घटना जीवन की दिशा को ही बदल देती है। इसलिए तुम भी हर विषय का अध्ययन ध्यान से करना सीखो।

अभ्यास

1. हिंदी में अर्थ लिखिए:-

(1) दुम = पूँछ	(2) धुन = लगन	(3) गणना = गिनती
(4) शिखर = चोटी	(5) सर्वोत्तम = सर्वोच्च	(6) शिक्षक = अध्यापक

2. विलोम शब्द लिखिए:-

(1) साधारण x असाधारण	(2) कठिन x सरल	(3) पूर्ण x अपूर्ण
(4) बचपन x बुढ़ापा	(5) सफलता x विफलता	(6) प्राप्त x अप्राप्त

3. जोड़े बनाइए:-

प्रश्न	विकल्प	उत्तर
1. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	- 18 घंटे काम करते थे।	**भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे।**
2. कलाम का जन्म	- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन	**रामेश्वरम में हुआ था।**
3. वे प्रतिदिन	- भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति थे।	**18 घंटे काम करते थे।**
4. श्याम पट पर	- रामेश्वरम में हुआ था।	**चिड़िया का चित्र बनाया।**
5. "इसरो"	- चिड़िया का चित्र बनाया।	**भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन**

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

1. **साधारण** - डॉ. अब्दुल कलाम का परिवार **साधारण** परिवार था।
2. **प्रतिदिन** - अब्दुल कलाम **प्रतिदिन** 18 घंटे काम करते थे।
3. **शुरूआत करना** - अब्दुल कलाम ने इंजीनियरिंग कोर्स करके अपने कैरियर की **शुरूआत** की।
4. **विभूषित करना** - भारत सरकार ने डॉ. अब्दुल कलाम को सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मानों से **विभूषित** किया।
5. **बुलंदियों को छूना** - डॉ. अब्दुल कलाम ने कहा–शिक्षकों के कारण आज मैं **बुलंदियों को छू** रहा हूँ।

5. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-

मेरे शिक्षकों ने मुझे इतना ऊँचा उठा दिया कि उनके कारण ही मैं आज बुलंदियों को छू रहा हूँ। हमारे जीवन में हमें शिखर पर लानेवाले तीन व्यक्ति ही होते हैं। वे हैं माता, पिता और गुरु। ये तीनों ही हमारे मन में सर्वोत्तम विचार और चरित्र का बीजारोपण कर सकते हैं।"

1. किसने अब्दुल कलाम को ऊँचा उठाया?

शिक्षकों ने अब्दुल कलाम को ऊँचा उठाया।

2. हमें शिखर पर लानेवाले कौन-कौन होते हैं?

हमें शिखर पर लानेवाले माता-पिता और गुरु होते हैं।

3. माता-पिता और गुरु का कर्तव्य क्या है?

माता-पिता और गुरु हमारे मन में सर्वोत्तम विचार और चरित्र का बीजारोपण कर सकते हैं।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए:-

(1) डॉ. अब्दुल कलाम के व्यक्तिगत जीवन के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

डॉ. अब्दुल कलाम का व्यक्तिगत जीवन कठिन परिश्रम करते हुए बीता। वे साधारण परिवार के थे। वे प्रतिदिन 18 घंटे काम करते थे। स्कूली शिक्षा समाप्त करके उन्होंने मद्रास इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नालॅजी से इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद 'इसरो' में राकेट इंजीनियरिंग का कोर्स किया।

(2) अध्यापाक ने बच्चों को 'चिड़िया का पाठ' कैसे समझाया?

अध्यापक श्री शिवसुब्रह्मण्यम अय्यर करीब 45 मिनट तक चिड़िया का पाठ समझाते रहे। तीन बच्चे समझ नहीं सके। इसलिए अध्यापक ने तीनों बच्चों को अपने घर बुलाया। उन्हें समुद्रतट पर ले गये। चिड़िया की ओर इशारा करके उन्होंने बच्चों को समझाया कि चिड़िया में जीवन होता है।

(3) अब्दुल कलाम के जीवन में माता-पिता और गुरु का क्या स्थान रहा?

अब्दुल कलाम के जीवन में माता-पिता और गुरु का सर्वोच्च स्थान रहा। हमारे जीवन में हमें शिखर पर लानेवाले तीन व्यक्ति होते हैं। वे हैं माता, पिता और गुरु। वे तीनों ही हमारे मन में सर्वोत्तम विचार और चरित्र का बीजारोपण कर सकते हैं। शिक्षकों के कारण उनके सपने साकार होने का मनोबल मिला।

7. "डॉ. अब्दुल कलाम" पाठ का सारांश लिखिए।

डॉ. अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्तूबर 1931 को रामेश्वरम में हुआ। उनका परिवार बहुत साधारण परिवार था। एक बार स्कूल में उनके अध्यापक शिवसुब्रह्मण्यम अय्यर पढ़ा रहे थे। उन्होंने श्याम-पट् पर चिड़िया का चित्र बनाया। 45 मिनट तक 'चिड़िया' का पाठ पढ़ाया। मात्र तीन बच्चे समझ नहीं सके। अध्यापक तीन बच्चों को समुद्र-तट पर ले गये। उन्होंने एक चिड़िया की ओर इशारा करते हुए उन्हें समझाया कि चिड़िया में जीवन होता है। अब्दुल कलाम को इससे प्रेरणा मिली। शिक्षकों द्वारा स्वप्न में उड़ने की इच्छा को साकार करने का मनोबल उन्हें मिला।

कलाम ने एरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करने के बाद 'इसरो' में रॉकेट इंजिनियरिंग का कोर्स किया। वहीं अपनी कैरियर की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि जीवन में हमें शिखर पर लानेवाले तीन व्यक्ति होते हैं। वे हैं - माता, पिता और गुरु। आज डॉ. अब्दुल कलाम की गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों में की जाती है। भारत सरकार ने उनको 'पद्मभूषण' 'पद्मविभूषण' और 'भारत रत्न' जैसे सर्वोच्च सम्मानों से विभूषित किया।

* * * * *

5. सिद्धार्थ का गृह त्याग

(1)

*(यशोधरा अपने शयन-कक्ष में पुत्र राहुल के साथ लेटी है।
कमरे का दरवाज़ा धीरे से खुलता है।)*

यशोधरा : (चौंकते हुए) कौन?

सिद्धार्थ : क्यों चौंक गई, यशोधरा?

यशोधरा : (उठते हुए) आर्यपुत्र, अभी सोये नहीं?

सिद्धार्थ : यशोधरा, आज तक सोया ही तो था, अब तो जागने की वेला आ गई है।

यशोधरा : क्या सूर्योदय होनेवाला है?

सिद्धार्थ : शायद हो जाए! हाँ, तुम क्यों नहीं सोयी?

यशोधरा : राहुल अभी-अभी तो सोया है।

सिद्धार्थ : अब तुम भी सो जाओ, यशोधरा। मैं चलूँ।

यशोधरा : थोड़ी देर बैठिए।

सिद्धार्थ : जागने के बाद बैठा नहीं जाता, बल्कि चला जाता है।

यशोधरा : आज आप कैसी बातें कर रहे हैं?

सिद्धार्थ : मैं तो तुम्हें देखने आया था। राहुल अपनी माता के अंक में सुख की नींद सो रहा है। तुम अपने पुत्र में रमी हो। तुम भाग्यवती हो यशोधरा।

यशोधरा : मैं तो आपको पाकर ही भाग्यवती हुई हूँ।

सिद्धार्थ : मैं तो जागना चाहता हूँ ताकि शेष सभी को जगा सकूँ। विदा!
(सिद्धार्थ चले जाते हैं।)

(2)

(सूर्योदय हो रहा है। नदी के तट पर सिद्धार्थ अपने सेवक छंदक के साथ खड़े हैं)

सिद्धार्थ : छंदक, यह नदी ही कपिलवस्तु की सीमा है न?

छंदक : हाँ, प्रभु!

सिद्धार्थ : मैं इस भूमि पर युवराज नहीं हूँ, छंदक। अच्छा, थोड़ा विश्राम करें।

छंदक : प्रभु, हम कपिलवस्तु से बहुत दूर हैं। लौटने में देर हो जाएगी।

सिद्धार्थ : मैं अब लौटूँगा नहीं, छंदक।

छंदक : यह सब आप क्या कह रहे हैं, स्वामी?

सिद्धार्थ : छंदक, अब तुम लौट जाओ।

छंदक : पर प्रभु, आपके बिना महाराज, राजमाता......

सिद्धार्थ : सब एक-दूसरे के बिना जी लेते हैं। जो मुझे चाहिए, उसे मैं खोजने जा रहा हूँ। छंदक, लो यह युवराज के राजसी वस्त्र, महाराज को लौटा देना।

छंदक : यह क्या कर रहे हैं, प्रभु!

सिद्धार्थ : मैं आज से तुम्हारा प्रभु नहीं। मेरा किसी से कोई संबंध नहीं। मैं तो बस पथ का भिखारी हूँ, छंदक।

(सिद्धार्थ एक-एक करके अपने वस्त्र उतारकर छंदक को देते हैं। छंदक रोता है)

सिद्धार्थ : मैं भिक्षुक हूँ, तुम्हीं से पहली भिक्षा माँगता हूँ।

छंदक : (रोते हुए) यह क्या कह रहे हैं, महाराज?

सिद्धार्थ : मुझे महाराज न कहो, छंदक। नदी से जल लाकर मेरे ये राजसी केश काट दो।

छंदक : प्रभु! यह नहीं होने का, कभी.....

सिद्धार्थ : तुम्हारे मना करने पर भी ये कटेंगे अवश्य ही। फिर तुम्हीं क्यों नहीं काट देते? (छंदक उनके बाल काट देता है।)

सिद्धार्थ : (प्रसन्न होकर) जाओ, छंदक, तुम्हारा कल्याण हो। अब तुम जाओ।

छंदक : प्रभु, लौट चलिए।

सिद्धार्थ : जाओ छंदक! अब देर न करो, जाओ।
(छंदक रोते हुए दोनों घोड़ों को लेकर नदी पार कर जाता है।)

सिद्धार्थ : (स्वयं से) सिद्धार्थ! उठो! और आगे बढ़ो! चारों दिशाएँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। जब तक निर्वाण का पथ न मिले, चलते चलो, चलते चलो.....।

अभ्यास

1. हिंदी में अर्थ लिखिए:-

(1) चौंक = अचरज	(2) वेला = समय	(3) सीमा = हद
(4) शेष = बाकी	(5) विश्राम = आराम	(6) कल्याण = भलाई

2. विलोम शब्द लिखिए:-

(1) सूर्योदय x सूर्यास्त	(2) थोड़ा x ज़्यादा	(3) अच्छा x बुरा
(4) भाग्यवती x अभाग्यवती	(5) सुख x दुख	(6) उतारकर x पहनकर

3. जोड़े बनाइए:-

	प्रश्न		विकल्प	उत्तर
1.	मैं आज तक सोया हुआ था	-	सुख की नींद सो रहा है।	**अब तो जागने की वेला आ गई है।**
2.	राहुल अपनी माँ के अंक में	-	अब तो जागने की वेला आ गई है।	**सुख की नींद सो रहा है।**
3.	हम कपिलवस्तु से	-	तुम्हीं से पहली भिक्षा माँगता हूँ।	**बहुत दूर हैं।**
4.	मैं भिक्षुक हूँ	-	तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं।	**तुम्हीं से पहली भिक्षा माँगता हूँ।**
5.	चारों दिशाएँ	-	बहुत दूर हैं।	**तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं।**

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

1. **वेला** – सूर्योदय का समय ही हर एक के जागने की **वेला** है।
2. **भाग्यवती** – सिद्धार्थ की पत्नी यशोधरा **भाग्यवती** थी।
3. **खोजना** – सिद्धार्थ मुक्ति का मार्ग **खोजने** जा रहे थे।
4. **भिक्षा** – सिद्धार्थ सेवक छंदक से पहली **भिक्षा** माँगते हैं।
5. **प्रतीक्षा** – सेवक छंदक कपिलवस्तु की ओर वापस जाने की **प्रतीक्षा** में रहा।

5. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों का उत्तर एक या दो वाक्यों मे लिखिए:-

सिद्धार्थ : मैं भिक्षुक हूँ, तुम्हीं से पहली भिक्षा माँगता हूँ।

छंदक : (रोते हुए) यह क्या कह रहे हैं, महाराज?

सिद्धार्थ : मुझे महाराज न कहो, छंदक। नदी से जल लाकर मेरे ये राजसी केश काट दो।

छंदक : प्रभु! यह नहीं होने का, कभी.....

सिद्धार्थ : तुम्हारे मना करने पर भी ये कटेंगे अवश्य ही। फिर तुम्हीं क्यों नहीं काट देते? (छंदक उनके बाल काट देता है।)

सिद्धार्थ : (प्रसन्न होकर) जाओ, छंदक, तुम्हारा कल्याण हो। अब तुम जाओ।

छंदक : प्रभु, लौट चलिए।

सिद्धार्थ : जाओ छंदक! अब देर न करो, जाओ।

(छंदक रोते हुए दोनों घोड़ों को लेकर नदी पार कर जाता है।)

सिद्धार्थ : (स्वयं से) सिद्धार्थ! उठो! और आगे बढ़ो! चारों दिशाएँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। जब तक निर्वाण का पथ न मिले, चलते चलो, चलते चलो.....।

1. सिद्धार्थ ने पहली भिक्षा किससे माँगी?

   सिद्धार्थ ने पहली भिक्षा छंदक से माँगी।

2. सिद्धार्थ ने छंदक से क्या करने के लिए कहा?

   सिद्धार्थ ने छंदक से नदी से जल लाकर उनके राजसी केश काटने के लिए कहा।

3. सिद्धार्थ ने अपने आपसे क्या कहा?

   सिद्धार्थ ने अपने आप से कहा–आगे बढ़ो! चारों दिशाएँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। जब तक निर्वाण का पथ न मिले, चलते चलो, चलते चलो.....।"

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए:-

(1) सिद्धार्थ ने गृह त्याग के पहले यशोधरा से कैसी बातें कीं?

जीवन के मूल तत्व खोजने हेतु सिद्धार्थ आधी रात को राजमहल से बाहर निकलते हैं। जाने से पहले वे अपनी पत्नी यशोधरा से गूढ़ भरी बातें करते हैं। जब यशोधरा पूछती है कि रात को इतनी देर तक क्यों जागे हुए हैं तो वे कहते हैं कि उन्हें जागने का समय आ गया है। आगे यह भी कहते हैं कि उन्हें शेष लोगों को जगाने का जिम्मा भी है। ऐसी बातें करके वे जाने लगते हैं।

(2) कपिलवस्तु की सीमा पर सेवक छंदक और सिद्धार्थ के बीच संपन्न संवाद को संक्षेप में लिखिए:-

कपिलवस्तु की सीमा पर पहुँचने के बाद छंदक कहता है कि अब लौटने का समय हो गया है। तब सिद्धार्थ जवाब देते हैं कि अब वे लौटनेवाले नहीं हैं। वे अपने राजसी वस्त्रों को उतारकर छंदक के पास देते हैं। छंदक से कहते हैं कि आगे से वे किसी का भी प्रभु या राजा नहीं हैं। उसी स्थान पर भिक्षुक बनकर रहने लगते हैं। सेवक छंदक से अपनी पहली भिक्षा माँगते हैं।

7. "सिद्धार्थ का गृह त्याग" पाठ का सारांश लिखिए:-

शुद्धोदन कपिलवस्तु के राजा थे। सिद्धार्थ उनके पुत्र थे। यशोधरा सिद्धार्थ की पत्नी थी और राहुल उनका बेटा था। सिद्धार्थ को अपनी सारथी छंदक द्वारा यह पता चला है कि बुढ़ापा, रोग, मरण आदि प्राकृतिक नियमों से कोई बच नहीं सकता। सिद्धार्थ ने मानव जीवन को इनसे छुटकारा दिलाने का रास्ता ढूँढना चाहा।

इसलिए वे एक दिन आधी रात को यशोधरा से कहते हैं कि वे इतने समय सोये हुए थे, पर अभी जग गये। सिद्धार्थ के विवेकपूर्ण बात सुनकर यशोधरा अपने को भाग्यवती समझती है। सूर्योदय के पहले सिद्धार्थ विदा लेते हैं। संसार को जगाने के लिए जाने लगते हैं।

सिद्धार्थ अपने सेवक छंदक के साथ कपिलवस्तु की सीमा तक पहुँच जाते हैं। छंदक के पास अपने राजसी वस्त्र को सौंपकर कहते है कि वे भिक्षुक बन गये हैं और उस क्षण से किसी से उनका संबंध नहीं है। छंदक के हाथों में अपने राजसी केश को कटवा लेते हैं। उसी स्थान पर भिक्षुक बन जाते हैं और सेवक छंदक से पहली भिक्षा माँगते हैं। छंदक रोते हुए चला जाता है। सिद्धार्थ अपने आप से यह कहकर आगे बढ़ते हैं कि जब तक जीवन की सच्चाई तथा निर्वाण संबंधी ज्ञान न मिले तब तक खोजते रहना है।

* * * * *

6. हमारा राज-चिह्न

हर एक देश के लिए अपना-अपना राज-चिह्न होता है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद हमारी सरकार ने अपने लिए एक नया राज-चिह्न चुन लिया है। हमारी डाक-टिकटों और सरकारी कागज़ों पर पहले इंग्लैंड के राजा या रानी की शकल छपी रहती थी। इन सब चीज़ों पर आज भारत का राज-चिह्न अंकित है।

दो हज़ार वर्ष पहले हमारे देश में सम्राट अशोक शासन करते थे। दुनिया के महान सम्राटों में अशोक का मुख्य स्थान है। एक महान शक्तिशाली सम्राट होकर अशोक ने अहिंसा तथा शांति का प्रचार किया था।

उन्होंने देश-भर में स्थान-स्थान पर पत्थर या लोहे के स्तूप और खंभे लगवाये थे। उनपर अच्छे-अच्छे उपदेश खुदवाये और कई तरह के चिह्न भी लगवाये। उन्हीं में से एक चिह्न को आज हमने अपना राज-चिह्न बनाया है।

यह चिह्न अशोक-स्तूप का ऊपरी भाग है। इसमें सिंहों की तीन मूर्तियाँ सामने दिखती हैं। इसके निचले भाग में एक चक्र है। चक्र के दोनों ओर घोड़े, बैल और हाथी की मूर्तियाँ हैं। इन सारी चीज़ों का मतलब हम यों लगा सकते हैं–सिंह गंभीरता, उदारता और शक्ति का द्योतक है। दुनिया में सबसे बहादुर जानवर सिंह ही है। यह जंगल का राजा कहलाता है। इस तरह एक नहीं, चार सिंहों की मूर्तियाँ हमारे राज-चिह्न में हैं। घोड़ा सारी दुनिया में पाया जाता है। पुराने ज़माने में जब रेल गाड़ी या मोटर गाड़ी नहीं थी, तब घोड़ा ही सबसे तेज़ और बढ़िया सवारी माना जाता था। इसलिए घोड़े को तेज़ी का चिह्न मान सकते हैं।

बैल और गाय देश की संपत्ति मानी जाती हैं। इनके बिना किसानों का काम चल ही नहीं सकता। देश का कल्याण इन्हीं पर निर्भर है। सब पालतू जानवरों में हाथी बहुत बलवान होता है। लोग इसे शुभ मानते हैं।

अब रही चक्र की बात। यह धर्म-चक्र कहलाता है। इसमें चौबीस छड़ें हैं। ये चौबीस छड़ें दिन के चौबीस घंटों को सूचित करती हैं। चक्र को उन्नति का प्रतीक मान सकते हैं। हमारे राष्ट्रीय झंडे पर इसी धर्म-चक्र का चिह्न रखा गया है।

इन सबका मतलब है कि शासक अपनी प्रजा का शासन धर्म और न्याय से करें, सारी प्रजा स्वस्थ हो; देश शांति तथा समृद्धि से भरपूर हो।

अभ्यास

1. हिंदी में अर्थ लिखिए:-

(1) छपा रहना	=	मुद्रित रहना	(2) शकल	=	रूप
(3) स्तूप	=	मिट्टी पत्थर आदि का ऊँचा ढूह	(4) द्योतक	=	प्रतीक, सूचक

2. विलोम शब्द लिखिए:-

(1) हिंसा X अहिंसा (2) बढ़िया X घटिया

(3) अधूरा X पूरा (4) तेज़ X मंद

3. जोड़े बनाइए:-

	प्रश्न		विकल्प	उत्तर
1.	बैल और गाय	-	अहिंसा और शांति का प्रचार करते थे।	**देश की संपत्ति मानी जाती है।**
2.	सम्राट अशोक	-	अच्छे-अच्छे उपदेश खुदवाये थे।	**अहिंसा और शांति का प्रचार करते थे।**
3.	लोहे के स्तूप और खंभे पर	-	चार सिंहों की मूर्तियाँ हैं।	**अच्छे-अच्छे उपदेश खुदवाये थे।**
4.	हमारे राजचिह्न में	-	चिह्न माना जाता है।	**चार सिंहों की मूर्तियाँ हैं।**
5.	घोड़े तेज़ी का	-	देश की संपत्ति मानी जाती है।	**चिह्न माना जाता है।**

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

(1) **खुदवाना** - अशोक ने स्तूपों और खंभों पर अच्छे–अच्छे उपदेश **खुदवाये।**

(2) **गंभीरता** - सिंह **गंभीरता,** उदारता और शक्ति का द्योतक है।

(3) **सम्पत्ति** - बैल और गाय देश की **संपत्ति** मानी जाती हैं।

(4) **राज–चिह्न** - भारत की डाक–टिकटों पर **राज–चिह्न** अंकित है।

(5) **बहादुर** - दुनिया में सबसे **बहादुर** जानवर सिंह है।

* * * * *

5. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए:–

"यह चिह्न अशोक-स्तूप का ऊपरी भाग है। इसमें सिंहों की तीन मूर्तियाँ सामने दिखती हैं। इसके निचले भाग में एक चक्र है। चक्र के दोनों ओर घोड़े, बैल और हाथी की मूर्तियाँ हैं। इन सारी चीज़ों का मतलब हम यों लगा सकते हैं–सिंह गंभीरता, उदारता और शक्ति का द्योतक है। दुनिया में सबसे बहादुर जानवर सिंह ही है। यह जंगल का राजा कहलाता है। इस तरह एक नहीं, चार सिंहों की मूर्तियाँ हमारे राजचिह्न में हैं। घोड़ा सारी दुनिया में पाया जाता है। पुराने ज़माने में जब रेल गाड़ी या मोटर गाड़ी नहीं थी, तब घोड़ा ही सबसे तेज़ और बढ़िया सवारी माना जाता था। इसलिए घोड़े को तेज़ी का चिह्न मान सकते हैं।

(1) हमारे राजचिह्न में कितने सिंहों की मूर्तियाँ हैं?
हमारे राजचिह्न में चार सिंहों की मूर्तियाँ हैं।

(2) सिंह किनका द्योतक है?
सिंह गंभीरता, उदारता और शक्ति का द्योतक है।

(3) घोड़े को किसका चिह्न मान सकते हैं?
घोड़े को तेज़ी का चिह्न मान सकते हैं।

6. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए:–

(1) हमारे राज–चिह्न में अंकित मूर्तियों की क्या–क्या विशेषताएँ हैं?

हमारे राज–चिह्न में अंकित मूर्तियों की अलग–अलग विशेषताएँ हैं। राज–चिह्न के सिंह गंभीरता, उदारता और शक्ति का चिह्न हैं। घोड़ा सक्रियता का उदाहरण है। बैल और गाय देश की संपत्ति का द्योतक हैं। चक्र धर्म का सूचक है।

(2) सम्राट अशोक के बारे में आप क्या जानते हैं?

अशोक दुनिया के महान सम्राटों में एक थे। वे दो हज़ार साल के पहले हमारे देश में शासन करते थे। महान शक्तिशाली होकर भी अशोक अहिंसा तथा शांति का प्रचार करते थे। उन्होंने देश भर में अनेक स्तूप और खंभे लगवाये। उन स्तूपों और खंभों पर अच्छे–अच्छे उपदेश खुदवाये।

7. "हमारा राजचिह्न" पाठ का सारांश लिखिए।

आज़ादी के बाद भारत ने अपने लिए राज–चिह्न बनाने का निर्णय किया। उसने सम्राट अशोक के स्तूप और खंभे के ऊपरी भाग को राज चिह्न चुना। इस राज चिह्न में सिंहों के तीन मूर्तियाँ सामने दिखती हैं। नीचे चक्र, घोड़े, बैल, गाय और हाथी की मूर्तियाँ दिखती हैं।

इन मूर्तियों के अलग–अलग अर्थ हैं। सिंह गंभीरता, उदारता और शक्ति का चिह्न है। घोड़ा सक्रियता का उदाहरण है। बैल और गाय देश की संपत्ति का द्योतक हैं। हाथी शुभ का लक्षण है। चक्र धर्म का सूचक है और चक्र में चौबीस छड़ें हैं। ये चौबीस छड़ें दिन के चौबीस घंटों को सूचित करती हैं। यह देश की उन्नति का प्रतीक है। हमारे राष्ट्रीय झंडे में यही धर्म–चक्र रखा गया है।

संक्षेप में राज–चिह्न का मतलब यह है कि शासक राज्य का शासन धर्म और न्याय से करें और देश सुख और संपन्न रहे।

* * * * *

7. सरदार वल्लभ भाई पटेल

सुदृढ़ एवं विशाल शरीर, कठोर मुखमुद्रा और शत्रु के प्रति ललकार भरी आँखें - ऐसे थे सरदार वल्लभ भाई पटेल। उनके सीने में तूफ़ान की शक्ति थी और भुजाओं में उत्साह की फड़कन। वे ख़तरे से डरते नहीं थे। उनमें अद्‌भुत संगठन-शक्ति थी। वे अपने बारे में मौन रहते थे। उनका व्यक्तित्व अन्य नेताओं से सर्वथा अलग था। वे अवसर का उचित उपयोग करना जानते थे। वीरता उनकी आराध्य देवी थी। वे सच्चे अर्थों में ऐसे योद्‌धा थे, जो झुकना जानते ही नहीं थे।

वल्लभ भाई पटेल ऊपर से जितने रूखे, निष्ठुर और अभिमानी-से प्रतीत होते थे, भीतर वे उतने ही सरल और कोमल हृदय के थे। उनके हृदय में ममता और प्यार की हिलोरें मारती रहती थीं। किसानों की गरीबी देखकर उनका हृदय व्याकुल हो जाता था।

वल्लभ भाई का जन्म 31 अक्तूबर, 1875 को गुजरात के खेड़ा जिले के करमसद नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री झवेर भाई पटेल कृषक थे। पटेल के पिता ने 1857 के स्वाधीनता-संग्राम में बुंदेलों के साथ मिलकर अंग्रेज़ों के विरुद्‌ध लड़ाई लड़ी थी। वल्लभ भाई पर भी पिता के देश-प्रेम और वीरता की छाप पड़ी।

मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वल्लभ भाई की इच्छा उच्च शिक्षा प्राप्त करने की थी, किंतु घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण यह विचार छोड़ दिया। 'मुख्तारी' की परीक्षा उत्तीर्ण कर सन् 1900 से गोधरा में फ़ौजदारी के मुकद्दमों की प्रैक्टिस करने लगे। शीघ्र ही उन्हें बहुत ख्याति मिल गई। उन्हीं दिनों उनकी पत्नी बीमार हो गईं। सरदार पटेल उन्हें शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) के लिए मुंबई में छोड़कर वकालत के कार्य में लग गये।

एक दिन जब वे अदालत में फ़ौजदारी के एक मुकद्दमे की पैरवी में व्यस्त थे तभी उन्हें एक तार मिला। उसे पढ़कर उन्होंने जेब में रख लिया और मुकद्दमे की पैरवी करने लगे। सब काम समाप्त कर लेने के बाद ही उन्होंने मित्रों को बताया कि तार में पत्नी की मृत्यु का समाचार था। विपत्ति में धैर्य और साहस बनाये रखने का इससे बढ़कर और क्या उदाहरण हो सकता है। पत्नी की मृत्यु के समय वल्लभ भाई की आयु केवल 33 वर्ष की थी। उन्होंने आजीवन दूसरा विवाह नहीं किया।

विलायत जाकर बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने की इच्छा वल्लभ भाई के मन में सँजोये हुए थे। इसके लिए वे कुछ रुपये भी जमा करने लगे थे। वे एक विदेशी कंपनी से पत्र-व्यवहार कर रहे थे।

महात्मा गाँधी ने 'खेड़ा सत्याग्रह' का भार वल्लभ भाई पटेल के कंधों पर डाला। उन्होंने गुजरात के गाँव-गाँव में पैदल घूमकर गाँधीजी के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया। यहाँ से उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। 'खेड़ा सत्याग्रह' की सफलता का सारा श्रेय वल्लभ भाई पटेल को जाता है।

नागपुर का 'झंडा-सत्याग्रह' भी वल्लभ भाई की कर्मठता का ज्वलंत प्रमाण है। इसी सत्याग्रह ने उन्हें 'सेनापति' का गौरव प्रदान किया। उनकी यह हुँकार आज भी हमारे कानों में गूँजती है-"शत्रु का लोहा भले ही गरम हो, पर हमारा हथौड़ा ठंडा ही काम दे सकता है।"

वल्लभ भाई पटेल को सबसे अधिक प्रसिद्धि 'बारडोली' के सत्याग्रह से मिली। इस सत्याग्रह की सफलता से वे समस्त देश के **'सरदार'** बन गये। इस सत्याग्रह में उन्होंने

किसानों को प्रेरणा देते हुए कहा था - "आप तो किसान हैं। किसान कभी दूसरे की ओर हाथ नहीं पसारता। आप सब मेरे हैं, फिर डर किसका? आप किसी से न डरें। न्याय के लिए, प्रतिष्ठा के लिए बराबर लड़िये।"

15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता मिलने पर वे स्वाधीन भारत के उपप्रधानमंत्री बनाये गये। उन्हें गृह विभाग और रियासती विभाग भी सौंपे गये। इस पद पर रहते हुए उन्होंने ऐसी रक्तहीन क्रांति का उदाहरण प्रस्तुत किया जो इतिहास में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। उन्होंने भारत की लगभग 600 रियासतों का एकीकरण करके दिखा दिया, 219 छोटी रियासतों को विभिन्न प्रदेशों से मिला दिया। हैदराबाद के निज़ाम ने इसमें कुछ आना-कानी की। विवश होकर उन्हें पुलिस-कार्रवाई करनी पड़ी। फलस्वरूप तीन दिन में ही निज़ाम की सत्ता का अंत हो गया। यह कार्य कितना कठिन रहा होगा, इसका अनुमान सहज लगाया जा सकता है।

स्वतंत्रता का यह महान योद्धा 15 सितंबर, 1950 को हमसे विदा हो गये। भारत में जब भी कोई संकट की घड़ी आती है, तभी सरदार पटेल का स्मरण किया जाता है। वे सच्चे अर्थों में 'लौह पुरुष' थे। इतिहास के पन्नों में सरदार वल्लभ भाई पटेल का नाम सदा अमर रहेगा।

अभ्यास

1. हिंदी में अर्थ लिखिए:-

(1) उत्साह = उमंग (2) योद्धा = वीर (3) विचार = सोच

(4) अभिमानी = घमंडी (5) छाप = असर (6) ख्याति = कीर्ति

2. विलोम शब्द लिखिए:-

(1) उचित x अनुचित (2) उत्तीर्ण x अनुत्तीर्ण (3) उत्साह x निरुत्साह

(4) मृत्यु x जन्म (5) स्वाधीनता x पराधीनता (6) विदेश x स्वदेश

3. **जोड़े बनाइए:-**

	प्रश्न		विकल्प	उत्तर
(1)	खेड़ा जिला	-	झवेर पटेल	**गुजरात**
(2)	पटेल के पिता	-	गुजरात	**झवेर पटेल**
(3)	पटेल का जन्म	-	सेनापति का गौरव	**1875**
(4)	भारत की स्वतंत्रता	-	1875	**15 अगस्त 1947**
(5)	झंड़ा सत्याग्रह	-	15 अगस्त 1947	**सेनापति का गौरव**

4. **निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-**

(1) **सर्वथा** - वल्लभ भाई का व्यक्तित्व अन्य नेताओं से **सर्वथा** अलग था।

(2) **व्याकुल** - किसानों की गरीबी देखकर पटेल का मन **व्याकुल** हो जाता था।

(3) **विरुद्ध** - महात्मा गाँधी पराधीनता के **विरुद्ध** लड़ाई लड़ी थी।

(4) **उत्तीण** - मोहन दसवीं कक्षा की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ।

(5) **ख्याति** - आदर्श लोगों की ख्याति बढ़ जाती है।

5. **निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-**

"सन् 1900 से गोधरा में फ़ौजदारी के मुकद्दमों की प्रैक्टिस करने लगे। शीघ्र ही उन्हें बहुत ख्याति मिल गई। उन्हीं दिनों उनकी पत्नी बीमार हो गईं। सरदार पटेल उन्हें शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) के लिए मुंबई में छोड़कर वकालत के कार्य में लग गए।

एक दिन जब वे अदालत में फ़ौजदारी के एक मुकद्दमे की पैरवी में व्यस्त थे तभी उन्हें एक तार मिला। उसे पढ़कर उन्होंने जेब में रख लिया और मुकद्दमे की पैरवी करने लगे। सब काम समाप्त कर लेने के बाद ही उन्होंने मित्रों को बताया कि तार में पत्नी की मृत्यु का समाचार था। विपत्ति में धैर्य और साहस बनाए रखने का इससे बढ़कर और क्या उदाहरण हो सकता है। पत्नी की मृत्यु के समय वल्लभ भाई की आयु केवल 33 वर्ष की थी। उन्होंने आजीवन दूसरा विवाह नहीं किया।

1. वल्लभ भाई की पत्नी कहाँ बीमार पड़ीं?
   वल्लभ भाई की पत्नी गोधरा में बीमार पड़ीं।

2. वल्लभ भाई ने अपनी पत्नी को शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) करने के लिए कहाँ दाखिल किया?

वल्लभ भाई ने अपनी पत्नी को शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) करने के लिए मुम्बई के अस्पताल में दाखिल किया।

3. पटेल ने अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार कब दूसरों को सुनाया?

पटेल ने अपनी पत्नी की मृत्यु का समाचार मुकद्दमा खत्म होने के बाद दूसरों को सुनाया।

6. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में दीजिए:-

1. वल्लभ भाई पटेल के व्यक्तित्व के बारे में आप क्या जानते हैं?

वल्लभ भाई पटेल ख़तरे से डरनेवाले नहीं थे। वे कठोर मुखमुद्रा और शत्रु के प्रति ललकार भरी आँखें दिखानेवाले व्यक्ति थे। अद्‌भुत संगठन शक्ति के कारण उनका व्यक्तित्व अन्य नेताओं से सर्वथा अलग रहा। उनके पास हर अवसर का उचित प्रयोग करने की क्षमता थी। वे वीरता के पुजारी थे।

2. वल्लभ भाई पटेल का नाम कब से 'सरदार' वल्लभ भाई पटेल हुआ और उसका कारण क्या था?

नागपुर का झंडा सत्याग्रह वल्लभ भाई की कर्मठता का ज्वलंत प्रमाण है जिसके कारण उन्हें सेनापति का गौरव मिला। उनको सबसे अधिक प्रसिद्धि "बारडोली" के सत्याग्रह से मिली। इसकी सफलता से ही उनको 'सरदार' का नाम मिला।

3. स्वतंत्र भारत में पटेल जी की सेवाएँ क्या-क्या थीं? या क्यों पटेल को 'लौह पुरुष' कहते हैं?

पटेल जी स्वतंत्र भारत के उप-प्रधान मंत्री बने। गृह विभाग और रियासती विभाग उन्हें सौंपे गये। उन्होंने लगभग 600 रियासतों को भारत के साथ जोड़ा। इस विषय में हैदराबाद निज़ाम के साथ सख्त (Strict) व्यवहार करने में उन्होंने संकोच नहीं किया। पटेल जी की सेवाएँ अनुपम थीं। इसलिए हम उनको 'लौह पुरुष' कहते हैं।

7. **"सरदार वल्लभ भाई पटेल" पाठ का सारांश लिखिए।**

सरदार वल्लभ भाई का जन्म गुजरात में 31 अक्तूबर 1875 को हुआ। घर की आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने के कारण वे मेट्रिक के बाद उच्च शिक्षा पा नहीं सके। इसलिए वे "मुख्तारी" की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर गोधरा में फ़ौजदारी के मुकद्दमों की वकालत करने लगे। वल्लभ भाई सुदृढ़ एवं विशाल शरीर, कठोर मुखमुद्रावाले थे। शत्रु के प्रति ललकार भरी आँखें दिखानेवाले थे। उनका व्यक्तित्व अन्य नेताओं से सर्वथा अलग था और आप हर अवसर का उचित प्रयोग करनेवाले थे। उनमें अद्भुत संगठन-शक्ति थी। वे सच्चे अर्थों में ऐसे योद्धा थे, जो झुकना जानते ही नहीं थे।

इनके धैर्य और साहस की कोई सीमा ही नहीं रही। एक बार अदालत में अपनी पत्नी की मृत्यु की ख़बर तार के जरिए पढ़ लेने के बाद भी वे बिना रुके पैरवी करते रहे। खेड़ा सत्याग्रह, झंडा सत्याग्रह आदि के नेतृत्व के कारण उन्हें "सेनापति" का गौरव प्राप्त हुआ। वारडोली सत्याग्रह से वे समस्त देश के "सरदार" बन गये।

स्वतंत्रता के बाद वे भारत के उपप्रधानमंत्री बने। उपप्रधानमंत्री के पद में उन्होंने गृह और रियासती विभागों में रक्तहीन क्रांति मचा दी। हम सब उनको "लौह पुरुष" के रूप में आज भी याद करते हैं। ऐसे महान योद्धा 15 सितंबर 1950 को हमसे विदा हो गये।

इतिहास के पन्नों में सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम सदा अमर रहेगा।

* * * * *

मध्यमा पाठ्य पुस्तक

भाग - 3

देवनागरी लिपि का मानक रूप

भाषा

मनुष्य अपने मन के भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपने मुख से ध्वनियाँ निकालता है। इन्हीं ध्वनियों से शब्द और वाक्य बनते हैं। इन शब्दों और वाक्यों के समूह को भाषा कहते हैं।

साधारण रूप से भाषा के दो भेद होते हैं:-

भाषा

- **कथित भाषा** — मुँह से बोली जानेवाली भाषा
- **लिखित भाषा** — वर्णों की सहायता से लिखी जानेवाली भाषा

लिपि

कथित या लिखित भाषा का मूल आधार ध्वनि है। ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं उन्हें लिपि कहते हैं। विश्व में अनेक भाषाएँ और उनकी लिपियाँ हैं इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:-

भाषा	लिपि
हिंदी, संस्कृत, मराठी, नेपाली आदि	देवनागरी
उर्दू, अरबी	फारसी, अरबी
पंजाबी	गुरुमुखी
अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन	रोमन
रूसी, बल्गेरियन	रूसी

वर्तमान में संविधान की अष्टम् अनुसूची में बाईस भाषाओं को 'राष्ट्रीय भाषा' का दर्जा दिया गया है जिनकी लिपियाँ इस प्रकार हैं:-

क्रम संख्या	भाषा	लिपि	क्रम संख्या	भाषा	लिपि
1.	असमी	असमिया	12.	बांगला	बांगला
2.	ओडिसा	ओडिया	13.	मणिपुरी	मैती
3.	उर्दू	अरबी/फ़ारसी	14.	मराठी	देवनागरी
4.	कन्नड़	कन्नड़	15.	मलयालम	मलयालम
5.	कश्मीरी	पश्तो-अरबी	16.	संस्कृत	देवनागरी
6.	कोंकणी	देवनागरी	17.	सिंधी	अरबी/देवनागरी
7.	गुजराती	गुजराती/देवनागरी	18.	हिंदी	देवनागरी
8.	तमिल	तमिल	19.	संताली	ओल चिकि/देवनागरी
9.	तेलुगु	तेलुगु	20.	मैथिली	तिरहुता/देवनागरी
10.	नेपाली	देवनागरी	21.	बोडो	देवनागरी
11.	पंजाबी	गुरुमुखी	22.	डोगरी	देवनागरी

मानक हिंदी वर्णमाला तथा अंक

भाषा में प्रयुक्त मूल - ध्वनि अथवा उसके चिह्न को वर्ण कहते हैं। वर्णों के दो भेद होते हैं - स्वर और व्यंजन। हिंदी में ग्यारह (11) स्वर और तैंतीस (33) व्यंजन हैं। इन सब वर्णों के समूह को हिंदी की वर्णमाला कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में कुल चवालीस (44) वर्ण हैं। स्वर, व्यंजन तथा देवनागरी अंकों का जो मानक स्वरूप निर्धारित किया गया है, वह निम्नलिखित है:-

वर्णमाला

स्वर | **व्यंजन**

स्वर

स्वतंत्र रूप में उच्चरित किये जानेवाले वर्णों को स्वर कहते हैं। स्वरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होता है।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ

व्यंजन

स्वरों की सहायता से उच्चरित वर्णों को व्यंजन कहते हैं।

क वर्ग	-	क	ख	ग	घ	ङ
च वर्ग	-	च	छ	ज	झ	ञ
ट वर्ग	-	ट	ठ	ड	ढ	ण
त वर्ग	-	त	थ	द	ध	न
प वर्ग	-	प	फ	ब	भ	म
		य	र	ल	व	
		श	ष	स	ह	

इसके अलावा व्यंजन के विभिन्न रूप निम्नलिखित हैं:-

संयुक्त व्यंजन	अनुस्वार	विसर्ग	चंद्रबिंदु
अर्धचंद्र	हल् चिह्न	आगत व्यंजन	ँ

संयुक्त व्यंजन

दो व्यंजनों के मेल से संयुक्त व्यंजन बनते हैं। जैसे:-

क् + ष = क्ष

त् + र = त्र

ज् + ञ = ज्ञ

श् + र = श्र

अनुस्वार (शिरो बिंदु) :-

अनु + स्वर अर्थात् स्वर के बाद आनेवाला व्यंजन है। वास्तव में इसका प्रयोग शब्द के आरंभ में न आकर मध्य या अंत में होता है। यह नासिक्य ध्वनि है तथा इसका लिपि चिन्ह '˙' है।

✶ अनुस्वार '˙' का प्रयोग पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, - ये पंचमाक्षर कहलाते हैं) के स्थान पर किया जाता है। जैसे गंगा, चंचल, कंठ, गंध, कंप।

✶ यदि पंचमाक्षर के बाद किसी **अन्य वर्ग** का कोई वर्ण आए तो उसे अनुस्वार के रूप में प्रयोग नहीं किया जाता। जैसेः- अन्य, वाङ्.मय, चिन्मय, उन्मुख आदि।

✶ पंचम वर्ण यदि द्वित्व (दो बार) रूप में हो तो भी पंचम वर्ण अनुस्वार के रूप में परिवर्तन नहीं होगा। जैसे :- अन्न, सम्मेलन, सम्मति

विसर्गः- (:)

विसर्ग का उच्चारण "ह" का अघोष रूप जैसा होता है। यह सामान्यतः तत्सम शब्दों के अंत में प्रयुक्त होता है। जैसेः- अतः, पुनः, प्रायः, मूलतः, क्रमशः आदि।

तद्भव तथा देशी शब्दों में विसर्ग का प्रयोग नहीं करते। इसके आधार पर "छह" लिखना ही ठीक रहेगा।

अनुनासिक चिह्न :- (चंद्रबिंदु "ँ")

यह स्वर का नासिक्य विकार है। इसमें स्वरों का ध्वनिगुण होता है। इसका उच्चारण मुँह और नाक से किया जाता है। उच्चारण में हवा निकलती है। जैसेः- आँ, ऊँ, एँ, माँ, हूँ, आएँ।

यदि शिरोरेखा के ऊपर जुड़नेवाली मात्रा के साथ चंद्रबिंदु आए तो वहाँ स्थान लाघव को ध्यान में रखकर सिर्फ़ बिंदु का प्रयोग किया जाता है। जैसेः- मैं, नहीं, में आदि।

अर्धचंद्र (ॅ)

अंग्रेज़ी के जिन शब्दों में अर्धविवृत "ओ" ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध उच्चारण को हिंदी में लाने के लिए "आ" की मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र लगाया जाता है। जैसेः- हॉल, मॉल, डॉक्टर, टॉकीज़ आदि।

हल् या हलंत चिह्न (्)

यह चिह्न व्यंजन के नीचे लगाया जाता है। इसका उच्चारण स्वर रहित होता है। अर्थात् वह व्यंजन विशुद्ध रूप से व्यंजन है। जैसेः- जगत्, विद्वान, चिट्ठी, बुड्ढ़ा आदि।

आगत व्यंजन (. नुक्ता)

उर्दू से आए अरबी - फ़ारसी मूलक शब्द हिंदी में ज्यों के त्यों प्रयोग किये जाते हैं और हिंदी के अंग बन चुके हैं। जैसे :- ख़, ज़, ड़, ढ़, फ़

जैसेः- खाना : ख़ाना, राज : राज़, फन : हाइफ़न आदि।

हिंदी अंक

देवनागरी अंक

१	२	३	४	५	६	७	८	९	०

देवनागरी अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप

1	2	3	4	5	6	7	8	9	0

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिएः-

1. वर्ण किसे कहते हैं?
   भाषा में प्रयुक्त मूल-ध्वनि अथवा उसके चिह्न को वर्ण कहते हैं।

2. कथित या लिखित भाषा का मूल आधार क्या है?
   कथित या लिखित भाषा का मूल आधार ध्वनि है।

3. लिपि किसे कहते हैं?
   ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है उसे लिपि कहते हैं।

4. हमारे संविधान में कितनी भाषाओं को "राष्ट्रीय भाषा" का दर्जा दिया गया है?
   हमारे संविधान में 22 भाषाओं को "राष्ट्रीय भाषा" का दर्जा दिया गया है।

5. हिंदी वर्णमाला में कितने स्वर और व्यंजन हैं?
   हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं।

6. स्वरों का प्रयोग कैसे होता है?
   स्वरों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होता है।

7. व्यंजन किसे कहते हैं?
स्वरों की सहायता से उच्चरित वर्णों को व्यंजन कहते हैं।

8. संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं? उदाहरण दीजिए।
दो व्यंजनों के मेल को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। त् + र = त्र

9. अनुस्वार किसे कहते हैं?
स्वर के बाद आनेवाले व्यंजन को अनुस्वार कहते हैं।

10. विसर्ग के कुछ उदाहरण दीजिए।
विसर्ग के कुछ उदाहरण – अतः, पुनः, प्रायः, क्रमशः आदि।

11. अनुनासिक चिह्न का उदाहरण दीजिए।
आँ, ऊँ, एँ, माँ, हूँ, आएँ आदि अनुनासिक चिह्न के कुछ उदाहरण हैं।

12. हल् या हलंत चिह्न व्यंजन में कहाँ लगाया जाता है? उदाहरण दीजिए।
हल् या हलंत चिह्न व्यंजन के नीचे लगाया जाता है। जगत्, विद्वान, चिट्ठी आदि इसके कुछ उदाहरण हैं।

13. किन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग नहीं होता है?
तद्भव तथा देशी शब्दों में विसर्ग का प्रयोग नहीं होता है।

14. हिंदी अंकों का देवनागरी रूप लिखिए:- १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

15. देवनागरी अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप लिखिए:- 1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

* * * * *